साधना और सेवा का संगम

वात्सल्य निर्झर

अप्रैल 2026,
विक्रम सम्वत्
2082
50/-

Rajluxmi Samvid Gurukulam Sainik School

Nalagarh (Himachal Pradesh) | C.B.S.E. Residential Boys School | (Class VI to XII) Science and Commerce

We bring out the winner in you

How We Stand Out ?

- Regular Sanskaram Classes
- Smart Classes and Experienced
- Teachers
- Indoor and Outdoor Games
- Shooting, Swimming, Horse Riding
- Integrated program for NDA,JEE and NEET preparation
- Communication Classes
- AC Hostels
- Pollution Free Environment
- Well Equipped Labs
- Healthy and Vegetarian Food

Contact for Admission

Bariyan, Tehsil : Nalagarh, Dist. : Solan (H.P.) 174101

Call us: 7876004251 & 7876430935, www.samvidgurukulam.com

या देवी सर्वभूतेषु कन्या रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

साधना और सेवा का संगम

वात्सल्य निर्झर

वर्ष 23, अंक 3, अप्रैल 2026

मुख्य संरक्षक

परम पूज्य महामण्डलेश्वर अनन्तश्री विभूषित युगपुरुष स्वामी परमानन्द गिरि जी महाराज

संरक्षक

परम पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

प्रधान सम्पादक

संजय गुप्ता

प्रकाशक

परमशक्ति पीठ द्वारा संजय गुप्ता

सम्पादकीय मण्डल

देवेन्द्र शुक्ल एवं स्वास्तिका

प्रधान कार्यालय

वात्सल्य प्रकाशन, परमशक्ति पीठ
लव-102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, दिल्ली-110092
दूरभाष : 011 22238751
मोबाईल सम्पर्क : 99588 85858
ई मेल : info@vatsalyagram.org
वेबसाइट : www.vatsalyagram.org

शाखा कार्यालय

वात्सल्य ग्राम
मथुरा-वृन्दावन मार्ग, पोस्ट-वात्सल्य ग्राम
वृन्दावन (उ.प्र.) 281003

प्रकाशक एवं सम्पादक संजय गुप्ता द्वारा
परमशक्ति पीठ के लिए
हरिओम त्यागी, ए.आर.पैकटेक प्रा.लि.,
आई-23, बेसमेंट, सेक्टर-9, नोएडा, उ.प्र. से मुद्रित एवं
परमशक्ति पीठ,
लव-103, 66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार,
पटपड़गंज, दिल्ली से प्रकाशित

वात्सल्य निर्झर में प्रकाशित लेख एवं रचनाएँ उनके लेखकों के विचारों की अभिव्यक्ति हैं। अतः उनसे सम्बन्धित किसी भी विवाद के लिए लेखक अथवा रचनाकार ही उत्तरदायी रहेंगे।

नववर्षाभिनन्दन
विक्रम संवत् 2083 की शुभकामनाएँ

अन्तर्यात्रा

06 प्रकृति और परमात्मा में क्या भेद है

08 आत्मानन्द की प्राप्ति को लक्ष्य बनाएँ

12 उदित संग दुर्गा

16 भारत की महामहिम राष्ट्रपति...

23 वात्सल्य दर्शन ने उन्हें भावविभोर किया

29 धर्म संस्कृति

30 युवाओं के लिए

गोस्वामी श्री तुलसीदास जी कृत
मानस मोती

मुखिआ मुखु सो चाहिऐ खान पान कहुँ एक।
पालइ पोषइ सकल अँग तुलसी सहित बिबेक॥

-अयोध्या काण्ड

मुखिया मुख के समान होना चाहिए, जो खाने-पीने को तो एक (अकेला) है, परन्तु विवेकपूर्वक सब अंगों का पालन-पोषण करता है!

अपनी बात... - देवेन्द्र शुक्ल

भारत की माननीया राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी का विगत 20 मार्च को वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में शुभागमन हुआ। भारत के राष्ट्रपति देश के प्रथम नागरिक होकर हमारी तीनों सेनाओं के सर्वोच्च कमाण्डर भी होते हैं। उनके हस्ताक्षर के बिना देश में कोई भी कानून लागू नहीं होता। उन्हीं को ये अधिकार है कि वे सुप्रीम कोर्ट से मृत्युदण्ड पाये किसी अपराधी की सजा को अपनी इच्छा के आधार पर आजीवन कारावास में बदल सकते हैं। अर्थात् वे उस स्थान पर विराजित होते हैं, जिसके ऊपर कोई नहीं।

तो इतने असाधारण पद पर आसीन किसी व्यक्ति का किसी संस्थान में पदार्पण क्या साधारण बात है? नहीं। यह बिलकुल असाधारण है। तो आखिर ऐसा क्या है वात्सल्य ग्राम में जहाँ भारत की माननीया राष्ट्रपति जी पधारीं? यह जानने-समझने के लिए हमें इस कॉलम में पिछले लगभग चार दशकों की यात्रा करनी होगी।

अस्सी के दशक में तब श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन एक नई करवट ले रहा था। वो सारा हिन्दू समाज इसका एक हिस्सा था, जिसके पूर्वजों ने अपने आराध्य प्रभु श्रीराम की जन्मभूमि पर अपना स्वाभाविक अधिकार पाने के लिए लाखों बलिदान दिये थे। ईसवी सन 1528 में एक विदेशी आक्रमणकारी लुटेरे और नरपिशाच 'बाबर' नाम के हत्यारे ने लाखों हिन्दुओं की हत्याएँ करते हुए जन-जन के आराध्य श्रीराम की जन्मभूमि पर उनके भव्य मंदिर को ध्वस्त किया था। चूँकि यह सारे संसार के कोटि-कोटि हिन्दू समाज की आस्था का विषय था इसलिए ये कभी भी भूला नहीं गया। समय-समय पर इसके लिए आंदोलन होते रहे। विश्व हिन्दू परिषद के ऐसे ही आंदोलन 'श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ' का मुखर चेहरा रहीं साध्वी ऋतम्भरा जी।

उनके पूज्य गुरुदेव युगपुरुष स्वामी श्री परमानन्द जी महाराज की पावन प्रेरणा से मानों उन्होंने स्वयं को उस आंदोलन में झोंक दिया था। वो तब एक ऐसी युवा और तेजस्वी संन्यासिनी थीं, जिनका संबोधन सुनकर भारत की तरुणाई उठ खड़ी हुई। देश की पूज्यपाद आध्यात्मिक शक्तियों के साथ मिलकर उन्होंने हिन्दुत्व का ऐसा शंखनाद फूँका, जिसके कंपन से साढ़े चार शताब्दियों तक हिन्दू समाज के सीने में एक शूल की तरह गड़ा रहा 'बाबरी ढाँचा' तिनकों के समान बिखर गया। फिर उस स्थान पर कैसे आज श्रीराम लला का एक भव्य मंदिर खड़ा हुआ, हम सब जानते हैं।

हिन्दू समाज की 'अग्निशिखा' साध्वी ऋतम्भरा जी का मूल स्वभाव 'वात्सल्य' रहा है, उनके बचपन को देखने वाले इस बात को जानते हैं। ये बात और है कि ईश्वर की किसी योजना ने उन्हें देश भर में 'फायर ब्राण्ड हिन्दू नेत्री' की पहचान दिलाई।

नब्बे के दशक में किसी सन्त ने उन्हें सड़क पर पाये गए किसी निराश्रित नवजात को साध्वी ऋतम्भरा जी की गोद में सौंपा और यहीं से वात्सल्य गंगा प्रवाहित हो चली। लाखों-लाख युवाओं को आंदोलित करने वालीं साध्वी ऋतम्भरा जी अब अपने वात्सल्य की शीतल धारा से अनेकों निराश्रित नवजातों को संतृप्त कर रही थीं। वो अब 'दीदी माँ' की भूमिका में थीं।

उनकी अध्यक्षता में संस्था 'परमशक्ति पीठ' का गठन हुआ। दिल्ली के एक छोटे से घर से प्रारंभ हुई वात्सल्य की यह सृष्टि भगवान श्रीकृष्ण और माता यशोदा की भावभूमि में आकर अकल्पनीय विस्तार को पा गई। समाज की किसी विवशता के शिकार अनेक ऐसे बच्चों को यहाँ दीदी माँ और उनकी सहयोगी बहनों की 'यशोदा गोद' मिली, जिसके वात्सल्य की गुनगुनी धूप में उनका जीवन अंकुर पोषित-पल्लवित हुआ। आज ऐसी अनेकों बेटियाँ मेडिकल, इंजीनियरिंग, एकाउंट्स और मैनेजमेंट जैसे क्षेत्रों में उच्च शिक्षित होकर समाज में प्रतिष्ठित हो रही हैं। कुलीन परिवारों में उनके विवाह हो रहे हैं। इसके साथ ही ऐसे अनेकों सेवा प्रकल्प वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में संचालित हो रहे हैं, जिनकी समाज को आवश्यकता है।

हमारी महामहिम राष्ट्रपति जी को दीदी माँ की इस वात्सल्य सृष्टि का दर्शन करने की इच्छा बहुत दिनों से थी, जो उनके पदार्पण से हम सबका सौभाग्य बनी। वात्सल्य परिवार के हम सभी सदस्य उनके बहुत-बहुत आभारी रहेंगे...सदैव।

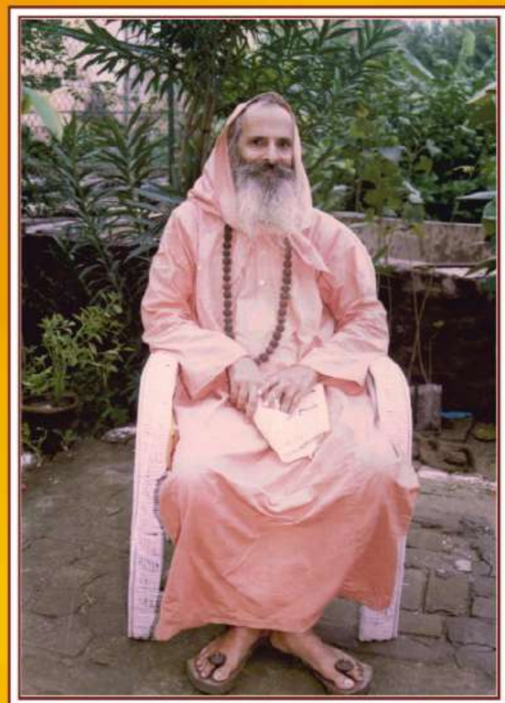

प्रकृति और परमात्मा में क्या भेद है?

- युगपुरुष स्वामी परमानन्द जी महाराज

जो कुछ भी हम करते हैं, प्रकृति हमसे करवाती है। जो कुछ हम चाहते हैं, उसे भी हमारी प्रकृति, हमारा स्वभाव उसे पाने के लिए मजबूर करता है। आप जो कुछ भी कर रहे हो यह प्रकृति के द्वारा मजबूर हो। आप मजबूर हो खाने के लिए, जीने के लिए, बूढ़े होने के लिए, भूख के लिए, सोने के लिए, मजबूर हो शौच जाने के लिए, पेशाब करने के लिए और लगभग यह सृष्टि पैदा करने के लिए। ऐसे तो पेड़ भी फलों को पैदा कर रहे हैं, पशु भी बच्चे पैदा कर रहे हैं। परन्तु पेड़ को अक्ल नहीं है परन्तु वो काम कर रहा है। यदि दिमाग होता तो पेड़ भी कहता कि ये फल मैंने पैदा किये हैं। मैं इतना बड़ा हूँ, तुम छोटे हो परन्तु उसको बुद्धि नहीं है। इसके बाद भी प्रकृति के कुछ अंश उसमें भी काम कर ही रहे हैं।

तो जो मैंने 'प्रकृति' शब्द का एक प्रयोग किया है कि जो हो रहा है नेचर से। जो चाह रहे हो वह भी नेचर से। तुम जीना चाहते हो, मरना नहीं चाहते। क्यों? यदि मैं आपसे पूछ बैठूँ कि तुम्हें सुख क्यों पसंद है, दुःख क्यों पसंद नहीं? साधुओं को दुःख पसंद है? अभी संत हैं, घर-बार छोड़ा है, जरा इनसे पूछ लेना और जिसे पसंद हो जरा दुःख देकर देख लेना। तुरंत गुस्सा हो जाएंगे, नाराज हो जाएंगे। वो हमारी जो अंदर की एक नेचर है और जिससे तुम परिचित नहीं हो, वो तुम्हें मजबूर कर रही है। आपकी जो सच्ची प्रकृति है, जो परमात्मा का स्वभाव है तुम्हारे अंदर, वह मजबूर करता है। जैसे फिर एक बात बताएं, हम सब दो से बने हैं। इधर जो पुरुष बैठे हैं यह भी अकेले बाप की संतान हो कि मां की भी हो? जो अकेले का हो हाथ उठा दे। आप लोग भी दो से पैदा हुए हो। माँ-बाप से कि अकेली माँ से? आपकी शक्ल सूरत माँ से मिलती है, पर बाप आप में नहीं है? इनकी प्रकृति, इनका शरीर पिता से मिलता है पर बिना माँ के है? क्या यह जो हम दो से बने हैं, यही आकर्षण का कारण है? हम भी दो से बने हैं-जड़ प्रकृति और चैतन्य परमात्मा।

हम सब जितने भी दुनिया में प्राणी हैं, दो से बनें। परमात्मा है-सत्, चित और आनंद तथा प्रकृति है अनिर्वचनीय, परिवर्तनशील। वह बदलती रहती है। परमात्मा को बदलना पसंद नहीं है, मरना पसंद नहीं है। वह हमारे अंदर है, वह कहता है कि मरना नहीं। वह मांग रहा है। परमात्मा मांग रहा है ना मरना? परमात्मा मांग रहा है आनंद। नहीं तो तुम क्यों चाहते हो आनंद? हमारे प्रशिक्षण के बाद चेला बनाके समझाते हैं कि दुःख स्वीकार करो। कहते, नहीं पसंद। हमारे चेलों को भी पसंद नहीं। मर गए समझाते-समझाते। किसी को छोटा होना पसंद नहीं। सब बड़े होने की संघर्ष में पड़े। क्यों? इनकी गलती नहीं है। जो सबसे महान है-ब्रह्म, उसका स्वभाव है और प्रकृति का स्वभाव है बाँट देना, परिच्छिन्न कर देना, नाना बनाना। यह प्रकृति अनेक रूप बनाती है।

यह जो दो विरोधों से जीवन बना है अंतर्मन चाहता है आनंद। कभी-कभी छोटे बच्चे माँ-बाप के साथ आते हैं तो एक तरफ हम मिठाई दें और एक तरफ सोने का टुकड़ा। तो बच्चा इनमें से क्या लेगा? वो मिठाई ही लेगा। भले ही आप उसे समझाकर लाओ कि सोने का टुकड़ा लेना। बच्चा सोने की तरफ ध्यान नहीं देगा, वह मिठाई की तरफ ही ध्यान देगा।

तुम्हारा समझाया भी काम नहीं करता। यदि मान लो कि यदि वो तुम्हारे कहे सोने का टुकड़ा उठाएगा भी तो क्या दिल से उठाएगा? ऐसे ही आप भी दु:ख सह लोगे परन्तु दिल से नहीं। दिल से तो आपको सुख ही पसंद है। आपका जो दिल है वह सुख की तरफ अमरता की तरफ है। जीवन की तरह, मौत की तरह नहीं है परन्तु अब आ जाएगी तो क्या करोगे?

बस यही दु:ख है कि जो नापसंद है वह भी तुम्हारे पीछे पड़ा है। जो पसंद है उस इच्छा को हम छोड़ भी नहीं पाते। यदि परमात्मा का स्वभाव भीतर ना होता तो हम ना चाहते। परमात्मा का स्वभाव सत् होने को, चित होने को, आनंद होने को, व्यापक होने को। तुम बड़े क्यों होना चाहते हो, विस्तार क्यों चाहते हो? सारे जगत में तुम्हारा ही प्रभाव हो जाए। परमात्मा व्यापक है इसीलिए वो तुम्हें भी व्यापक होने के लिए मजबूर करता है। तुम बढ़ जाओ, सब तुम्हारा हो जाए। अमेरिका चाहता है सब जगह मेरा वर्चस्व हो जाए। हिन्दू चाहता है मेरा हो जाए, मुसलमान चाहता है मेरा हो जाए, ईसाई चाहते हैं बस सारी दुनिया में हमारा ही साम्राज्य हो। हमारे साम्राज्य के नीचे सब हों। इससे छुट्टी कैसे मिलेगी? जिसका जो धर्म है समझे वह मेरा नहीं। जैसे पुरुष का आकर्षण मिटाना हो तो हम पुरुष हो जाएँ। स्त्री का आकर्षण मिटाना हो तो हम स्त्री हो जाएँ। ब्रह्म के आकर्षण से मुक्त होना है, यदि अमरता की इच्छा से मुक्त होना है, सुख की इच्छा से मुक्त होना है तो क्या हो जाएँ? हम परमात्मा ही हो जाए। नहीं? जो चाहेंगे और नहीं होंगे, तो तड़पते रहेंगे। जब तक परमात्मा नहीं होंगे परमात्मा होने को तड़पते रहेंगे। बड़े होने को तड़पते रहेंगे। ध्यान रखना कि प्रकृति को पकड़कर तुम बड़े हो नहीं सकते। हाँ छोड़कर बड़े हो सकते हो। तुम देह का अभिमान छोड़ो, तुम इंद्रियों के धर्म का त्याग करो, स्वधर्म को पहचानो। यदि देह धर्म को तुम अपने साथ जोड़ो तो इसका मरना तुम्हारा धर्म हो जाएगा। चेतन परमात्मा और जड़ प्रकृति दोनों मिलकर तीसरी एक संतान पैदा हुई है जिसका नाम है जीव। अब जीव दो विरोधों से बना है। प्रकृति भी इसमें काम करती है। परमात्मा भी इसमें है। अपनी-अपनी तरफ खींच रहे हैं। परमात्मा मुझे आनंद की तरफ खींच रहा है। हम बिना आनंद के नहीं रहना चाहते तथा यह परिवर्तन और मृत्यु मुझे घेरे हुए हैं।

तो छूटने का एक उपाय है। एक दीया जलता देखा होगा। उसकी ज्योति ऊपर को जाती है। हम उन्हें ईनाम देंगे जो लोग ज्योति का मुँह नीचे को कर दें। आप मोमबत्ती नीचे कर सकते हो, बत्ती को नीचे लटका सकते हो परन्तु ज्योति का मुँह नीचे को नहीं कर सकते। ज्योति को जब आप नीचे करते हो तो वो ऊपर ही जाती है क्योंकि ज्योति अग्नि का हिस्सा है और अग्नि का केंद्र सूर्य है। ज्योति ऊपर को भागती है परन्तु मिट्टी का दीया और तेल ऊपर जाता नहीं। खींचते रहो, जलते रहो। बस ऐसे ही शरीर मरना चाहता है, हम नहीं मरना चाहते। यह भी एक दीया है। यह जिंदगी क्या है? शरीर मिट्टी का एक दीया है और एक चैतन्य ज्योति है। दीया जल रहा है। ज्योति तड़पती है ईश्वर को मिलने के लिए। यह शरीर मरने को, मिट्टी में मिलने को तैयार बैठा है। यह विरोध ही दु:ख है। इसको कैसे हल करें?

तो यह ग्रंथि पड़ गई है। गोस्वामी जी, संत-महात्मा और हम लोग भी कहते हैं कि लोग समझ ही नहीं पाते कि यह मेरा धर्म नहीं है। मैं अलग हूँ। मैं अमर ही हूँ, अमर होना नहीं। अमर होने की इच्छा तब खत्म होगी जब तुम अमर हो, यह समझ जाओ। दु:ख से बचने की, सुख पाने की इच्छा पूरी हो जाएगी जब तुम्हें समझ आएगा कि दु:ख मुझमें नहीं है। सभी उपनिषद, ग्रंथ और गुरु कहते हैं कि 'सर्व निवासी सदा अलेपा।' आप अलेप हैं परन्तु आप अलेप लगते नहीं हैं। आप दु:ख से लिप्त हैं, विकार से लिप्त हैं मृत्यु भय से लिप्त हैं। ब्रह्म वहाँ है, जहाँ ये स्पर्श नहीं करते। काम नहीं, क्रोध नहीं, लोभ नहीं, भय नहीं। अब आप कहोगे कहाँ?

ध्यान रखना कि कपट, दंभ, माया, छल, काम और क्रोध जहाँ रहते हैं, वहाँ राम नहीं रहते। राम नहीं रहते, छोड़कर जाते हैं। जाते तो नहीं, परन्तु मालूम पड़ने बंद हो जाते हैं। जहाँ काम है, वहाँ राम छिप जाता है, खो जाता है, मालूम नहीं पड़ता। समाप्त तो राम को कोई कर नहीं सकता। राम कभी भी मिटता नहीं परन्तु मालूम नहीं पड़ता। नहीं तो राम को भी कई मार देते। कई तो राम के दुश्मन हैं कि यह मर जाए तो झंझट खत्म हो जाए। तो रावण भी राम से लड़ाई करते समय कहता है कि यदि ये मनुष्य होंगे तो मैं इन्हें निपटा ही लूंगा और भगवान होंगे तो मैं ही निपट जाऊंगा। यही बात है। राम को कौन निपटा देगा? तो काम भी राम को मार तो नहीं सकता परन्तु पर्दा डाल देता है, छुपा देता है। वे मालूम नहीं पड़ते।

यूँ घड़ा देखो तो कुछ नहीं है परन्तु मिट्टी की व्यापकता में पर्दा डाल देता है। इतनी बड़ी मिट्टी 'घड़ा' होते ही मैं इतना हूं, अब व्यापक नहीं लगेगा। घड़े के इधर-उधर मिट्टी, पानी की लहर के इधर-उधर पानी। बस सीमित हो गए, पर्दा पड़ गया व्यापकता में। तुम्हारी ब्रह्मता में पर्दा है, तुम्हारे आनंद में पर्दा है, तुम्हारी चैतन्यता में पर्दा है।

ध्यान रखना कि प्रकृति को पकड़कर तुम बड़े हो नहीं सकते। हाँ छोड़कर बड़े हो सकते हो। तुम देह का अभिमान छोड़ो, तुम इंद्रियों के धर्म का त्याग करो, स्वधर्म को पहचानो। यदि देह धर्म को तुम अपने साथ जोड़ो तो इसका मरना तुम्हारा धर्म हो जाएगा। चेतन परमात्मा और जड़ प्रकृति दोनों मिलकर तीसरी एक संतान पैदा हुई है जिसका नाम है जीव। अब जीव दो विरोधों से बना है। प्रकृति भी इसमें काम करती है। परमात्मा भी इसमें है। अपनी-अपनी तरफ खींच रहे हैं। परमात्मा मुझे आनंद की तरफ खींच रहा है। हम बिना आनंद के नहीं रहना चाहते तथा यह परिवर्तन और मृत्यु मुझे घेरे हुए हैं।

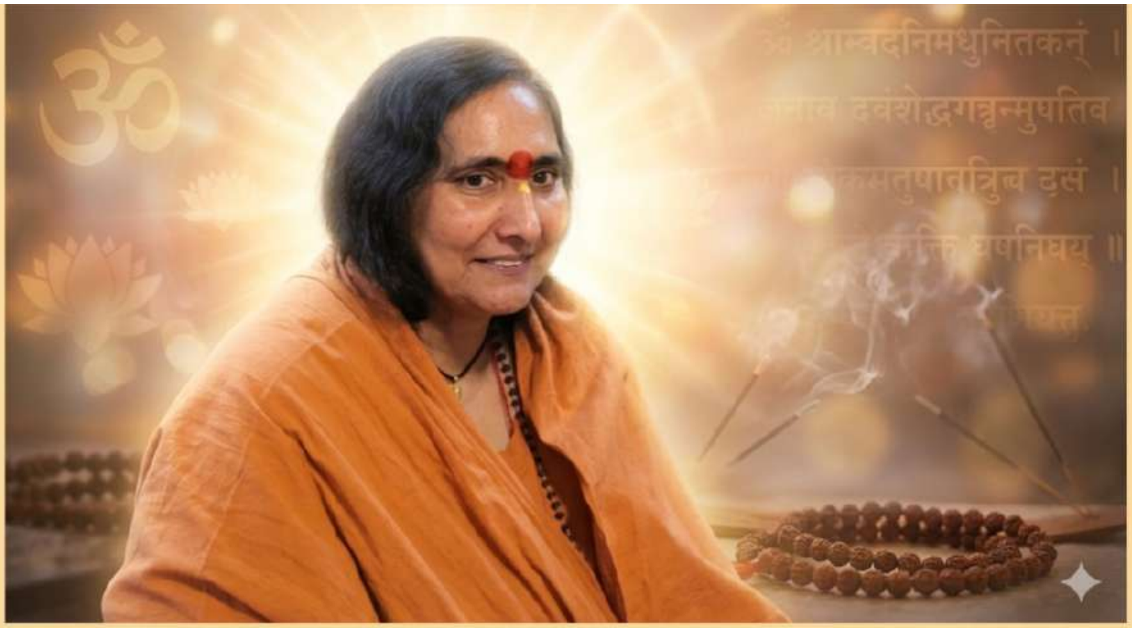

आत्मानन्द की प्राप्ति को लक्ष्य बनाएँ

- दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

'जीवन में जो कुछ भी मिलता है वह प्रभु की कृपा से ही मिलता है' इस विचार का परिणाम यह निकला कि आदमी हाथ पर हाथ धर कर बैठ गया। किसी बहुत पहुँचे हुए संत की चित्त दशा से कभी भाव उठा कि

अजगर करे ना चाकरी पंछी करे ना काम।

दास मलूका कह गए सबके दाता राम।।

इतनी ऊँची स्थिति में बैठे संत की बात साधारण स्थिति वाले ने पकड़ ली और वह आलसी हो गया, प्रमादी हो गया। वह पुरुषार्थ हीन हो गया, निठल्ला हो गया, अकर्मण्य हो गया। उसने चलना फिरना ही बंद कर दिया। अब वो केवल प्रभु की कृपा की प्रतीक्षा कर रहा है। अब वो पुरुषार्थ नहीं कर रहा। जिसने पुरुषार्थ किया, वो अहंकारी हो गया और जो भगवान की कृपा के भरोसे बैठा रहा, वो आलसी हो गया। बड़ा खतरा है! बड़ा मुश्किल है! तो फिर करना क्या है?

संतों ने कहा कि प्रारंभ करो स्वयं पात्रता अर्जित करने के लिए। कृपा तो बरस ही रही है, बस अपने औंधे घड़े को सीधा करने का प्रयास करो। इसका प्रारम्भ परिश्रम से ही करना होगा। परन्तु स्मरण रखना कि पचास प्रतिशत मेहनत से औंधा घड़ा सीधा तो हो सकता है लेकिन तब भी वह भर न सकेगा। वो भरेगा कैसे? जब प्रभु की कृपा बरसेगी। जब प्रभु प्रसाद बरसाएंगे। ध्यान रखना कि बरसते हैं बादल लेकिन औंधे घड़े कभी भरते नहीं। इसलिए तुम्हारा प्रयत्न होना चाहिए, पुरुषार्थ होना चाहिए। अपने हृदय के पात्र को पात्र बनाने का प्रयत्न, औंधे घड़े को सीधा करने का प्रयत्न और फिर उसके बाद प्रतीक्षा। उसके बाद परमात्मा की अनन्य कृपा बरसेगी।

स्वयं को परिष्कृत करो। स्वयं को तैयार करो। कुछ पा जाने के बाद भी अहंकार मत करो कि ये सब तुम्हारे करने से ही हुआ है। कर्म करते हुए सदैव यही अनुभव हो कि मैं एक ईश्वरीय शक्ति के द्वारा संचालित हो रहा हूँ। अभिमान या अहंकार का प्रश्न ही पैदा नहीं होना चाहिए। मन में यह भाव हो कि मैं तो निमित्त मात्र हूँ। मुझे प्रभु ने चुना, यह क्या कम सौभाग्य है! कितना बड़ा सौभाग्य कि लाखों लोगों में से प्रभु ने मेरा चुनाव किया! प्रभु ने मुझे चुना इस पवित्र अनुष्ठान के लिए। प्रभु की दृष्टि मेरे पर गई, यह अहोभाव जब जागता है तो फिर जीवन में आनंद की वर्षा होती है। आप कथाएँ सुनते हैं प्रभु की। क्या लाभ होता है उसका? मेरे गुरुदेव कहते हैं कि 'परमहंस संत शिरोमणि शुकदेव भगवान की तरह कोई कथा कहे और सच्चा मुमुक्षु परीक्षित की तरह कोई कथा सुने, तब कथा का कहना और कथा का सुनना सार्थक होता है।'

बहुत सारे लोग हैं जो कथा के बहाने समय बिताने के लिए आएंगे। बहुत सारे लोग हैं जो यह देखने के लिए आएंगे कि साध्वी ऋतंभरा ने श्रीराम जन्मभूमि के आंदोलन में बहुत गर्मागर्म भाषण दिए थे, अब वह कथा कैसे करती हैं, जरा यह भी देखने चलें। तो इस कौतुहल से कुछ लाभ होने वाला नहीं। कौतुहल तो एक नन्हें बच्चे को भी होता है जो अपनी माता से अनेकों प्रश्न पूछता रहता है। उनमें से कई के उत्तर माँ नहीं दे पाती। क्यों क्योंकि वहाँ उत्तर पाने की चाह नहीं, केवल प्रश्न हैं, वहाँ केवल कौतुहल हैं।

ध्यान रखना कि ये कौतुहल कुछ नहीं देगा। इससे ऊपर उठकर जिज्ञासु बनों। संतों ने कहा है कि जिज्ञासु नहीं मुमुक्षु होना होगा। मुमुक्षा ने हमारे प्राणों को ठीक वैसे ही पकड़ना चाहिए, जैसे कि अग्नि की एक चिंगारी सूखी घास की झोपड़ी को पकड़ती है। परमात्मा को पाने की चाह ऐसी ही होनी चाहिए। जैसे शरीर के प्राण श्वासों में होते हैं, श्वास ना लो तो शरीर खत्म हो जाए, ठीक ऐसे ही प्रीति ना हो तो आत्मा खत्म

हो जाए। वह बात अलग है कि प्रीति हमने धन के साथ जोड़ी, पद के साथ जोड़ी, प्रतिष्ठा के साथ जोड़ी। यदि यह प्रीति कथा के साथ जुड़ जाए। कथा श्रवण करते-करते मैं अपने अस्तित्व को भूल जाऊँ। 'मैं किसी संस्था का अध्यक्ष हूँ', यह बोध समाप्त हो जाए। तभी कथा सुनने का महत्व है। श्रवण की बहुत बड़ी महिमा है। शुकदेव भगवान के श्रीमुख से कथा श्रवण करते हुए राजा परीक्षित भूल गए थे अपना सबकुछ। कथा श्रवण करते-करते जब मेरा चित्त ठहर जाए, मेरा मन ठहर जाए विचारों की श्रृंखला टूट जाए, संकल्प-विकल्प शांत हो जाएँ और सिर्फ सुनना ही बाकी रह जाए, तभी 'नैमिषारण्य' घटित होता है।

भारत की परम्परा पर बहुत बड़ा आरोप लगता है छुआछूत का। परन्तु यहाँ तो संतों की परम्परा कहती है कि 'जात पात पूछे ना कोई, हरि को भजे सो हरि का होई।' नैमिषारण्य का दृश्य ही स्मरण कीजिए कि यहाँ सूत जी महाराज अर्थात् तथाकथित निम्न श्रेणी में पैदा हुआ एक व्यक्ति तो व्यास पीठ पर बैठा है और कुल की कुलीनता के मालिक धरती पर बैठे कथा श्रवण कर रहे हैं। यहाँ तो सूत जी महाराज कथा कह रहे हैं लेकिन वहाँ तो देखिए त्रेता में काग भुशुंडी कथा कहते हैं। आप कल्पना कर सकते हैं कि कोई कर्कश स्वर वाला कौआ कथा कहे और मनुष्य उसे सुनें! कुछ वर्षों पहले तक कौआ जब कभी भी हमारे घर की मुंडेर पर आकर बोलता है तो दिल थोड़ा धक्-धक् करता था। लगता था कि कौवा बोल रहा है तो इसका मतलब है कि कोई आने वाला है। कागा बोल रहा है और अच्छा लगता है कि किसी का संदेश मिला। एक बार बोलेगा अच्छा लगेगा, दूसरी बार बोलेगा अच्छा लगेगा लेकिन तीसरी बार बोलेगा तो ढेला उस पर फेंकते हुए कहेंगे कि 'चल जा यहाँ से! कोई आएगा तब देखा जाएगा लेकिन अभी तू काँव-काँव करके हमारे कानों को पीड़ित मत कर।' ऐसा कौवा भी जब भगवान श्रीराम की कथा कहता है तो वो साक्षात् काग भुशुंडी हो जाते हैं और पक्षी राज गरुड़जी महाराज भी उनके चरणों में बैठकर कथा श्रवण करते हैं। हमारे यहाँ कथा की बड़ी महिमा है। कथा सुनना उनकी, जिनसे प्रीति करनी है। किसी की महिमा सुनोगे तभी तो उनके प्रति प्रेम होगा ना?

आज के इस युग में हम सारे जगत को चिन्ता से ग्रसित देखते हैं। सब कुछ बदल रहा है। मान्यताएँ और परम्पराएँ बदल रही हैं। लगभग प्रत्येक व्यक्ति धन के पीछे लगा है, पद के पीछे लगा है, प्रतिष्ठा के पीछे लगा है। बहुत कुछ पा लेने के बाद भी चित्त से दरिद्र है, चिंता में डूबा है, रात और दिन रोता है, ईर्ष्या और द्वेष की भट्टी में जलता है। ऐसे कलियुगी जीव को तृप्ति और शांति भला कैसे मिल सकती है? यह शाश्वत प्रश्न है। यह मेरा प्रश्न है। यह आपका प्रश्न है। बहुत सारी उपलब्धियों के बाद भी यदि मैं दरिद्र हूँ तो क्यों? बचपन से अभी तक अगर पीछे पलटकर देखता हूँ तो इतना कुछ पाने के बाद भी मेरे चित्त में कहीं-न-कहीं एक खालीपन क्यों है? जब अबोध था तब माँ के आंचल में मैंने खुशियाँ तलाशीं। जब और बड़ा हुआ तो मैंने पढ़ाई-लिखाई और डिग्रियों में अपनी खुशियाँ ढूंढीं। और बड़ा हुआ तब मैंने धन अर्जित किया। मेरी प्रतिष्ठा हो, इसके लिए मैंने न जाने कितने प्रयास किए। विवाह के बाद पति ने पत्नी के आलिंगन में और पत्नी ने पति के सानिध्य में अपने सुख ढूंढे। फिर संतानों की किलकारियों के बीच मैं कभी यहाँ तो कभी वहाँ भागा।

जहाँ-जहाँ से मुझे आनंद का निमंत्रण मिला, मैं उसी ओर दौड़ता रहा लेकिन अन्ततः सबकुछ मृग मरीचिका ही सिद्ध हुआ। दूर रहकर किसी व्यक्ति या वस्तु में सुख दिखाई दिया परन्तु जैसे ही उसकी उपलब्धता हुई, वो दुःख का रूप धारण करके सामने आ खड़ा हुआ। तो कहाँ है सुख? तो सूत जी महाराज ने कहा कि जो कोई भी भगवान की वांग्मयी प्रतिमा श्रीमद् भागवत महापुराण की शरण लेता है वो परमानंद को प्राप्त करता है। आप धन पाकर सुखी हो गए। लॉटरी खुल गई तो सुखी हो गए। दिवाला पिट गया तो दुखी हो गए। सीजन लग गया बढ़िया तो मजा आ गया और जरा मंदा है तो बहुत ज्यादा दुःख। मतलब ये हुआ कि मेरा सुख और दुःख किसी और पर निर्भर है। मेरी प्रसन्नता की चाबी किसी दूसरे के पास है। वो चाहे व्यक्ति है या वो चाहे वस्तु है। सूत जी महाराज ने कहा कि अगर परम शांति चाहिए, हमेशा प्रसन्नता चाहिए तो फिर आओ इस सानिध्य में बैठो। यदि परम शांति की तलाश में, परमानंद की तलाश में आए हो तो भगवान की वांग्मयी प्रतिमा का सानिध्य लो।

संत कहते हैं कि शरीर की मृत्यु हुई, विचार की मृत्यु हुई, भाव की मृत्यु हुई परन्तु फिर भी कोई है जो बचा रहता है। वो कौन है? वो शाश्वत सत्य क्या है? वो सत्, चित, आनंद क्या है जिसके स्मरण मात्र से पाप खत्म हो जाते हैं और पाप जनित तापों का नाश हो जाता है? वो क्या है? हम चाहते हैं परमानंद में रहना लेकिन जितना ही आनंद की तलाश में हम दौड़े उतना ही हम और दुखी होते चले गए। सुख का सिक्का उठाया लेकिन साथ दुख का दूसरा पहलू भी स्वीकार करना पड़ा। मान के लिए आयोजन किए लेकिन अपमान हो ही जाता है। लाभ के सपने संजोये लेकिन हानि से पाला पड़ ही जाता है। हर्ष में नाचना चाहा तो विषाद में डूबना ही पड़ता है।

तो फिर आओ ना परमानंद की दशा में। परमानंद की स्थिति में पहुँचने के लिए उसे पाने के लिए डूबना पड़ता है। संतों ने कहा कि

डूबना है तो चल गहराई में साहिल के लिए बेताब ना हो
दरिया ए मोहब्बत के नादाँ कहीं किनारे होते है।

वस्तुएँ या व्यक्ति सुख तो दे सकते हैं लेकिन आत्मानन्द तो अन्तर्मन की गहराईयों में डूबकर ही मिलेगा। वो केवल बातें कह सुनकर नहीं मिलेगा, वो अनुभूति से मिलेगा। जब हम स्वयं के बोध को खोकर परमात्मा का चिंतन करेंगे, मैं देह हूँ मैं मन हूँ मैं विचार हूँ अथवा मैं बुद्धि हूँ, जब यह बोध जब शांत हो जाएगा तभी परम स्थिति को प्राप्त किया जा सकेगा।

मौत बोलने लगी

- भानुप्रताप शुक्ल
(यह लेख जुलाई, 1966 में लिखा गया है)

बड़ा-सा शहर, सदा जवान, और भरी-भरी चौड़ी सड़कें। उनके किनारे खड़ी ऊँची-ऊँची इमारतें देखकर ऐसा लगता है कि इनको बनवाने वाले भी इसी तरह बुलन्द ख्यालों के होंगे। हजरतगंज आज के लखनऊ का सबसे सुन्दर और मनचलों का मनपसन्द बाजार है। इधर सूरज ढला, चहल-पहल उभरनी शुरू हो जाती है और धीरे-धीरे बढ़ती हुई अंधियारी के साथ बिजली के लम्बे-लम्बे रॉड चमक उठते हैं, जिन्दगी की ढलान उन बुलन्द इमारतों में मुँह छिपा लेती है, जवानी की उमंगें सड़कों पर अठखेलियाँ करने लगती हैं, जैसे उनकी कोई प्रतियोगिता हो रही हो-सजावट और नाजो-नक्श की होड़, जिसकी चरम परिणति जीवन के नंगेपन का रूप ले लेती है और फिर उन मनचले जवानों की बेशर्म जिन्दगी उस सड़क की छाती आधी रात तक रौंदती रहती है। वहाँ चलने वाले चलते तो हैं अपने-अपने संगी-साथियों और प्रेमियों के साथ, लेकिन प्रत्येक की निगाहें कहीं दूर कुछ ढूंढती-सी दिखाई देती है, जैसे दुनिया का सारा सौंदर्य वे अपनी वासना की आग में जला डालने को आतुर हों। कौन किसकी क्या कहे! सभी एक-दूसरे की ओर इस तरह देखते और समझते हैं और शायद इसीलिए दिन भर मुरझाई पड़ी वह सड़क हर दिन संध्या को लहलहा उठती है-कहकहों से गूंज उठती हैं। न चाहते हुए भी उसे इस नग्न वासना का दर्शन करना पड़ता है। संजीदगी और शीलता का उपहास यद्यपि इससे सहा नहीं जाता फिर भी अपनी मजबूर जिन्दगी का दर्द छिपाए वह अनेक वर्षों से इसी प्रकार ये दृश्य देखती आ रही है। जीवन का उथलापन और कंगाल जिन्दगी वैभव का नाटक देखती है, साँस साधकर। छाती उसकी है और बहारों की मौज लेने वाले हैं नाजुक मिजाज लखनऊ के नौनिहाल-जिन्हें कल के भारत का नेता, कर्णधार, संरक्षक और अगुवा कहा जाता है, जिनकी जिन्दगी में रुपया कमाने की तमन्ना है, वैभव विलासिता के सपने हैं, अकड़ और अभिमान है, जो आकाश में उड़ते हैं लेकिन जिनके पास पैर रखने की ठोस धरती नहीं है। केवल देश की चिन्ता छोड़कर शेष सभी बातों का वे चिंतन करते हैं।

24 जून की संध्या बड़ी सुहावनी थी। पहला पानी बरसा था। सर्वत्र संतोष और सुख का अनुभव किया जा रहा था। उस दिन हजरतगंज और दिनों से अधिक भरा-पूरा था, होटलों की हँसी से उन्माद उफन-उफन कर सड़कों पर तैर जाता था। संयोग! हाँ, संयोग ही कहना चाहिए कि उस दिन इस उन्माद भरे वातावरण में मैं भी न जाने किस धुन में जा पहुँचा। पाँव सड़क पर बढ़े जा रहे थे, मन के विचार कहीं और पे। विषय और समस्या का तो पता नहीं है लेकिन इतना मुझे अवश्य ख्याल है कि मैं कुछ सोच जरूर रहा था। चौराहे पर खड़े सिपाही ने सीटी बजाई। लाल बत्ती जल उठी तो मैं कुछ चौंका। मैं किनारे के फुटपाथ पर चढ़ ही रहा था कि रघु ने कन्धे पर हाथ मारते हुए कहा -'कहिए, मिस्टर फिलास्फर! सड़कों पर चलने का कुछ नियम-कानून होता है। दाहिने-बाएँ का कुछ ख्याल करके चला

करो। कहीं दब गए तो...

'तो क्या? धरा का भार हल्का हो जाएगा।' मैं बीच में ही बोल उठा, नहीं तो वह न जाने और क्या-क्या कहता जाता। फिर भी वह नहीं माना। मुझे दार्शनिक कहने वाला दुनियादार जीवन-दर्शन की किताब खोल बैठा -'जिन्दगी इतनी फालतू नहीं है, अजीत! यह चलती-फिरती जिन्दगी धरा का भार नहीं, शोभा है। इसे जिए जाओ, उल्लास के साथ, हँस-हँसकर।'

मन विषण्ण हो उठा। घृणा हो गई उस उल्लासपूर्ण जीवन से। मैं चुप खड़ा था और भरी सड़क पर आँखें टिकी थीं। रघु भी खड़ा कुछ देख रहा था। मैं उल्लासपूर्ण जीवन पर विचार कर रहा था, वह मेरी भाव-भंगिमा पर नजरें गड़ाए था कि इसी बीच एक खूबसूरत जोड़ा -हाँ, आज के आधुनिक जगत् में उसे हिन्दी में 'जोड़ा' और अंग्रेजी में 'पेयर' ही कहा जाएगा, 'दम्पति' कहना इस पवित्र शब्द का अपमान ही है और शायद यह नया समाज भी उसे पसन्द न करे, आया और 'हेलो रघु' कहते हुए हाथ मिलाया मुस्कराए, हँसे और हाथ में हाथ डालकर चलते बने। स्वयं ही नहीं गए, रघु को भी लेते गए और वह भी उल्लास के सागर में समा गया। मैं किनारे पर खड़ा देखता रहा। न जाने क्यों, मुझे ऐसा लगा कि यह जिन्दगी का आनन्द नहीं ले पा रहा है बल्कि उसे बुझा रहा है आँखें मूंदकर उसे नष्ट करने में लगा है।

बड़ी देर तक खड़ा सोचता रहा। आसपास का वातावरण देखकर थोड़ी देर में मुझे ऐसा लगने लगा कि दुनिया आगे बढ़ गई है, केवल मैं पिछड़ गया हूँ। मुझे छोड़कर सबकी जिन्दगी आगे बढ़ती जा रही है, केवल मैं ही खड़ा हूँ। मन में आया कि मैं इतना तेज दौड़ूँ कि आगे जाने वाले हर इंसान को पिछाड़कर सबसे आगे-आगे चलूँ। मेरे पदचिह्नों पर चलकर ही पीछे वाले आगे बढ़ सकें। लेकिन तभी फिर वही जीवन का नंगापन उभरकर सामने खड़ा हो गया जो सौम्यता और सौजन्य को कुचलकर अठखेलियाँ कर रहा था।

मैं लौट पड़ा। एक ऐसे मोड़ से जहाँ से बाद के जीवन का आनन्द चलना शुरू करता है, लेकिन जिसे कोसते सभी हैं पर रोक बिरले ही पाते हैं, क्योंकि आज का हर इंसान आज की अपनी जिन्दगी से अपने आपमें खुद परेशान है। चमक-दमक की चकाचौंध में जिन्दगी को ढँककर उसे बाँटने का कुकृत्य तो वे करना नहीं चाहते लेकिन करते हैं सड़कों पर हँस-हँसकर और घर में रो-रोकर वे उसे घुटन की शिला के नीचे दबाकर मार डालते हैं। मजा तो यह है कि फिर भी वे उसे जिन्दा समझते हैं, उल्लास और आनन्द से भरपूर।

मेरे मन में विचार उठने लगा कि आखिर लोग जिसे नहीं चाहते उसे करते क्यों हैं? और यदि करते ही हैं तो डंके की चोट पर हँसी-खुशी करें, घुटन और शर्म की मजबूरी कैसी? मेरे इस विचार का मन के मानव ने उत्तर दिया -'बनावटीपन को ही यदि जिन्दगी कहते हो तो उसमें सदैव घुटन रहेगी। दूसरों को देखकर उसे सजाने-सँवारने की कोशिशें शर्म की ही देन हैं। जब मानव की जिन्दगी सजावटों में सिमट गई तो संतोष कहाँ? आज वस्त्रों की चमक-दमक जी रही है, उसमें लिपटी हुई जिन्दगी तो कब की मर चुकी है। फिर उसकी असलियत जानने के बाद घुटन नहीं होगी तो और क्या होगा ?

अब तक मैं स्टेशन रोड को पार करके बाल संग्रहालय के सामने से होता हुआ गौतम बुद्ध मार्ग पर, जिसे पहले लोग लाटूश रोड के नाम से पुकारते थे, आ गया था। इस सड़क पर थोड़ा आगे बढ़कर गंदे नाले का एक पुल है। यह नाला नहीं है, नहर है। एक ऐसी नहर, जो लखनऊ के नवाब गाजिउद्दीन हैदर के नाम से विख्यात है, जिसमें सम्पूर्ण लखनऊ की गंदगी बहती रहती है और उसके पुल पर मजबूर इंसान, भूख-प्यास और बीमारी से सड़ी जिन्दगी के लिए तड़पते रहते हैं। इस पुल को आप कभी खाली नहीं पाएंगे। हर समय अनेकों दीन-हीन मजबूर इंसान एक हाथ से पेट दबाए, दूसरा भीख के लिए किसी के सामने फैलाए मिलेंगे। शब्द कानों में पड़ते रहेंगे कि 'जो दे उसका भी भला, न दे उसका भी भला। बाबू! लंगड़े-अपाहिज की मदद करो, भगवान भला करेगा।'

लेकिन वहाँ किसकी कौन सुनता है? अपनी-अपनी जिन्दगी के नशे में चूर हर इंसान हिकारत की निगाह डालता हुआ आगे बढ़ जाता है। ये बढ़े हुए हाथ वैसे-के-वैसे फैले रहते हैं, जिव्हा बोलती रहती है, पेट की अंतड़ियां फूलती-पिचकती रहती हैं।

हाँ, तो मैं उस पुल के बीच में आ गया था। भिखारियों की आवाज मेरे भी कानों में पड़ी। लेकिन इंसान की इंसानियत, उसकी स्वार्थी जिन्दगी के बिगड़ते रूप पर घंटों मनन करने के बाद भी मेरे मन में यह विचार नहीं आया कि इन बढ़े हाथों पर दया की दृष्टि डालकर इन्हें वापस कर दूँ, पिचके पेटों को भरने में सहायक बनूँ। मैं दुःखी तो बहुत था लेकिन सच कहता हूँ उसके निवारण की बात मेरे मन में नहीं आई। हाँ, मेरी चाल कुछ धीमी हो गई थी और मैं हर मजदूर को बड़ी ही आश्चर्य किन्तु भावपूर्ण मुद्रा से देखता आ रहा था। सड़क पर चलने वाली जिन्दगी आगे और आगे ही बढ़ती जा रही थे। मेरे मन ने यह भी सोचा कि 'एक ओर जिन्दगी एक बोझ रही है, दूसरी ओर लोग हैं जिनकी जिन्दगी थिरकती हुई बढ़ती जा रही है।

इसी बीच सहसा एक चीख सुनकर मैं हड़बड़ा गया। करुणा को भी करुणार्द्र कर देने वाली इस चीख से सड़क पर पलने वाले मानव हृदय न पिघल सके। मैं भी उनमें से एक था। चीख सुनकर पीछे मुड़ा लेकिन इस उत्सुकता से कि देखें क्या हो रहा है। आज की दुनिया का इंसान किसी के दुःख-दर्द को कुतूहल की दृष्टि से ही देखता है। चीख क्या थी? जीवन का दुःख और उसकी प्रताड़ना ही सरे बाजार जिन्दगी का गला घोंट रही थी -'बाबू! आज सात दिन से खाना नहीं मिला। शाम हो गई, एक पैसा भी नहीं मिला। कलेजा सारी ताकत खो चुका, अब मरा। मुझे बचा लो, बाबू बड़ा पुण्य मिलेगा।'

चारबाग स्टेशन की ओर से मानव प्रवाह बहा चला आ रहा था। कारें, रिक्शे, तांगे, स्कूटर, साइकिलें, पैदल। उसमें बड़े-बड़े साहब और बाबुओं से लेकर मजदूर और भिखारियों तक सभी श्रेणी के लोग थे। सब सुन रहे थे, लेकिन उसे अनसुनी-सी कर अपनी राह बढ़ते जा रहे थे।

फिर भी कुछ लोग रुक गए थे, उनका जैसे मनोरंजन हो रहा हो। भीड़ बढ़ रही थी, वह चीख रहा था। धीरे-धीरे उसकी पुकार धीमी पड़ती गई साँसें रुकने लगीं। वहाँ खड़ी भीड़ की जेब में उस भूखे को बचाने के लिए पैसे नहीं थे, ऐसी बात नहीं। आहें सभी भर रहे थे, पर बाँहें कोई नहीं बढ़ा रहा था। एक सज्जन बोले -'सबेरे से एक पैसा भी नहीं मिला बेचारे को मर जाएगा, अभी थोड़ी देर में।'

उसी भीड़ में कंधे पर झोली टांगे एक इंसान और खड़ा था। सबेरे से हाथ फैलाते-फैलाते, नफरत और डाँट झेलते-झेलते थककर शायद वह अपनी झोंपड़ी को वापस आ रहा था। 'मर रहा हूँ, भूख से अभी मर जाएगा बेचारा' वह होंठों में ही बुदबुदाया। 'अच्छा है, मर जाएगा तो एक भिखारी कम हो जाएगा और फिर!' और वह चुप हो गया। उसकी आत्मा चीत्कार उठी। उसके अन्दर का छिपा मानव बोला -'क्या पता कि कल तुम्हारी भी यही दशा हो?' उसका विचार प्रवाह रुक गया। मन में बार-बार कोई कहने लगा -'चुप क्यों हो? जवाब दो।' वह घबड़ाकर बोल उठा -'जबाब दूँ?'

वहाँ खड़े लोग चौंक उठे। लोगों ने देखा, भीड़ को चीरते हुए वह उस दम तोड़ते हुए इंसान की बगल में पहुँचा और उसके सामने अपनी झोली उड़ेल दी। उसकी दिन भर की कमाई उस मरणासन्न के पास बिखर गई, लेकिन अफसोस कि तब तक उसकी जिन्दगी के सभी तार बिखर चुके थे। एक मजबूर दम तोड़ रहा था, दूसरा मजबूर शांत खड़ा देख रहा था, उसे और अपनी बिखरी हुई भीख को।

भीड़ बिखर चली थी । लोग उस असहाय और निरीह इंसान की उदारता और त्याग की सराहना करते अपनी राह चल पड़े थे। और मैं फिर अपने आप में खो गया था-हजरतगंज की वह उल्लासपूर्ण नंगी जिन्दगी! और वह गंदा और घिनौना इंसान? जिन्दगी क्या है? उसे कैसे जियो इसकी साक्षी, उल्लास क्या है इसका साकार स्वरूप जिसके दीन चेहरे पर भर आया था!'

उसके मस्तक की उभरी रेखाएँ स्पष्ट कह रही थीं कि आदमी हो, आदमी को प्यार करते जाओ, उसे दुलराओ इतना कि वह अपना दर्द भूल जाए और तुम अपना। अन्यथा उल्लास और जिन्दगी की राह पर तुम सब घुट-घुटकर मर जाओगे, जियोगे नहीं, केवल जीने का सहारा रहेगा। लाशें घूमेंगी, इंसान मर जाएगा।

उदित संग दुर्गा

उदित संग दुर्गा

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन

विगत चैत्र कृष्ण सप्तमी तद्नुसार 10 मार्च 2026 को वात्सल्य परिवार में सुश्री समर्पिता जी की बिटिया सौभाग्यकांक्षिणी दुर्गा परमानन्द का विवाह मथुरा निवासी श्रीमती अनु जी एवं स्व.श्री मनमोहन कपूर के सुपुत्र चिरंजीव उदित के साथ सम्पूर्ण विधि-विधान सहित सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन सानिध्य में परमशक्ति पीठ के अनन्य सहयोगियों सहित अनेक गणमान्यजनों की प्रतिष्ठापूर्ण सहभागिता में मातृपूजन, हल्दी, मेंहदी, सगाई तथा पाणिग्रहण संस्कार जैसी पुनीत परम्पराओं के साथ शगुन की भावपूर्ण विदाई सम्पन्न हुई।

यहाँ प्रस्तुत हैं इन सभी वैवाहिक संस्कारों की चित्रमय झलकियाँ :

मेंहदी

हल्दी एवं तेल

तिलक

सगाई

विवाह की शुभ क्षणिकाएँ

बारात एवं अगवानी

वर-वधु को शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ प्रदान करते पूज्या दीदी माँ जी एवं परिवारजन

फेरे एवं पूज्या दीदी माँ जी का शुभाशीष

कन्यादान एवं मांग भराई के भावपूर्ण दृश्य

वात्सल्य के आंगन से विदाई के मार्मिक क्षण

भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु का वात्सल्य ग्राम प्रवास

वृन्दावन

विगत 20 मार्च को भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु का वात्सल्य ग्राम में शुभागमन हुआ। इस अवसर पर परिसर स्थित 'संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल' के मुख्य द्वार पर पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी ने पुष्प गुच्छ भेंट कर आपकी भावभीनी अगवानी की। इस अवसर पर आपके साथ उत्तरप्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल तथा मंत्रीद्वय श्री लक्ष्मीनारायण चौधरी एवं श्री संदीप सिंह भी साथ रहे। स्कूल की छात्राओं ने वेदमंत्रों का वाचन कर वातावरण को पवित्र बना दिया। इस अवसर पर दीदी माँ जी ने उन्हें बताया कि यह भारत में बेटियों का पहला सैनिक स्कूल है। इस अवसर पर स्कूल के सभागार में स्कूल की कैडेट्स, विद्यालय परिवार तथा परमशक्ति पीठ के पदाधिकारियों के साथ महामहिम राष्ट्रपति महोदया का समूह चित्र लिया गया। संविद गुरुकुलम् के चैयरमेन श्री संजय भैयाजी एवं निदेशक सुश्री सुमनलता जी ने महामहिम को स्मृति चिन्ह भेंट किया। संविद गुरुकुलम् स्कूल की छात्राओं से मिलने के पश्चात् वात्सल्य ग्राम की आवासीय इकाई 'गोकुलम्' पहुँचकर उन्होंने वात्सल्य परिवार से भेंट की। दीदी माँ जी ने उन्हें इस प्रकल्प की सविस्तार जानकारी प्रदान करते हुए वात्सल्य परिवार की बेटियों, दामादों एवं उनके बच्चों से मिलवाया। बेटी सिया परमानन्द ने वेद मन्त्रों से महामहिम का स्वागत किया। वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन प्रवास के अन्तिम चरण में महामहिम राष्ट्रपति महोदया ने मंगल मानस स्थित माँ सर्वमंगला मंदिर की गुफा में पहुँचकर उनका दिव्य दर्शन करते हुए पूजन-अर्चन किया। दीदी माँ जी ने उन्हें निर्माणाधीन श्री सर्वमंगला पीठम् की जानकारी प्रदान की। अन्त में सपेरा जाति के कलाकारों ने ढोलक तथा बीन की मधुर धुनों के बीच महामहिम राष्ट्रपति जी को विदाई दी।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से परमशक्ति पीठ के श्री संजय भैयाजी, श्री आई.सी.अग्रवाल, श्री सी.बी.पाटोदिया, डॉ.श्याम अग्रवाल, श्री सुभाष जग्गा, श्री अशोक सरीन, श्री राजीव गुप्ता, श्री निरंजन शर्मा, श्री अनिल गोयल, श्री संतोष चोपड़ा, श्री शिवकुमार गोयल, श्री नारायणदास अग्रवाल, श्री नरसी कुलरिया, श्री महेश खंडेलवाल, श्री अनूप अग्रवाल, स्वामी सत्यशील जी, साध्वी शिरोमणि जी, आई.जी.एच.के.शर्मा सहित वात्सल्य परिवार के अनेक सदस्य सम्मिलित रहे।

वात्सल्य ग्राम के वो क्षण
जिनमें प्रोटोकॉल भी शिथिल हो गया

- वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के आवासीय संकुल में वात्सल्य परिवारों से भेंट प्रोटोकॉल के अन्तर्गत महामहिम को कुछ कदम दूर से ही परिवार के सदस्यों से चर्चा करनी थी परन्तु दो मिनिट चर्चा करने के बाद वे स्वयं ही तीन सीढ़िया उतरकर वात्सल्य परिवार के बीच आ खड़ी हुईं और राष्ट्रपति भवन के फोटोग्राफरों से उनका फोटो लेने के लिए कहा।
- गोकुलम् से माँ सर्वमंगला मन्दिर गुफा की ओर जाते समय उनकी दृष्टि अचानक कामधेनु गौगृह गौशाला के द्वार पर गई, जहाँ गौशाला के सेवक विश्व की सबसे छोटी पुंगनूर गाय के साथ बैठे थे। महामहिम अपना काफिला रुकवा कर उनके पास गईं और गायों को दुलारा।
- इसके बाद आगे बढ़ते हुए कृष्णा ब्रम्हरतन विद्या मंदिर के बाहर बने एक मंच पर स्कूल के बच्चे नयनाभिराम रासलीला का मंचन कर रहे थे। यहाँ भी प्रोटोकॉल के अनुसार उन्हें नहीं रुकना था परन्तु उन्होंने वहाँ रुककर पूज्या दीदी माँ जी और उत्तरप्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल के साथ फोटो खिंचावाई।

महामहिम राष्ट्रपति महोदया का वात्सल्य ग्राम प्रवास

वात्सल्य ग्राम की गौशाला में विश्व की सबसे छोटी पुंगनूर गाय को दुलारते हुए

वात्सल्य ग्राम स्थित माँ सर्वमंगला माता के दिव्य एवं चमत्कारिक श्रीविग्रह का दर्शन

पूज्या दीदी माँ जी का अभिनंदन करते हुए महामहिम राष्ट्रपति जी

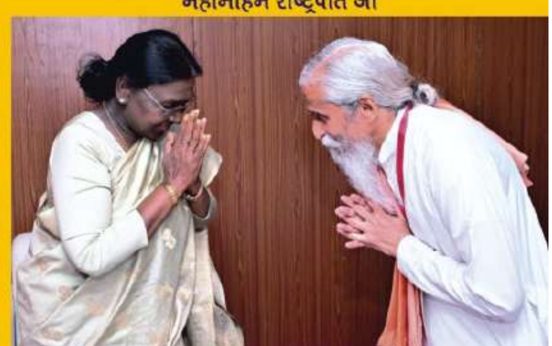

महामहिम राष्ट्रपति जी का अभिवादन करते हुए श्री संजय भैयाजी

वात्सल्य ग्राम के श्री सर्वमंगला मंदिर में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु
साथ हैं - पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी एवं माननीया राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल

भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु, उत्तरप्रदेश की राज्यपाल माननीया श्रीमती आनंदीबेन पटेल एवं पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के साथ 'संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल' वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में परमशक्ति पीठ के पदाधिकारियों एवं गणमान्यजनों का समूह चित्र

प्रथम पंक्ति में, बायें से:

कैप्टन कोमल सिंह, श्री सुरेन्द्र कुमार, श्री महेश खण्डेलवाल, श्री अशोक बंसल, श्री प्रेम पसरीचा, श्री सी.बी.पाटोदिया, श्री नारायण दास अग्रवाल, डॉ.श्याम अग्रवाल, श्री लक्ष्मीनारायण चौधरी, श्री संदीप सिंह, श्री संजय भैयाजी, महामंडलेश्वर स्वामी श्री चित्प्रकाश जी महाराज, आचार्य मृदुलकान्त शास्त्री, श्री नरसी कुरलिया, श्री संतोष चोपड़ा, श्री अशोक सरीन श्री उमेश गुप्ता, श्री अनूप अग्रवाल एवं श्री राहुल मित्तल

द्वितीय पंक्ति में, बायें से:

श्री नवीन पसरीचा, श्रीमती उषा पाटोदिया, श्री इन्दू अग्रवाल, डॉ.आरती बहुआ, सुश्री स्वास्तिका, श्री राजेश कुमार सोनी, स्वामी सत्यशील जी, स्वामी वेदानन्द जी, डॉ.श्याम अग्रवाल, श्री राजकुमार गोयल, श्री कमलकांत गर्ग, श्रीमती निवेदिता मित्तल, श्रीमती प्रतिमा गुप्ता, श्रीमती ममता अग्रवाल एवं श्री दीपक खत्री

प्रथम पंक्ति, बायें से :

श्री रविकान्त गर्ग, श्री अंकुश महाजन, श्री शिवकुमार गोयल, ले. कर्नल अग्निवेश पाण्डेय, श्री जयभगवान अग्रवाल, श्री महेन्द्र अग्रवाल, कमांडेंट प्रख्याधीश्वरन, आई. जी.एच.के.शर्मा, श्री संजय भैयाजी, श्री लक्ष्मीनारायण चौधरी, श्री संदीप सिंह ले.कर्नल वन्दना तिवारी, श्री आई.सी.अग्रवाल, मेजर जनरल पृथीसिंह, मेजर जनरल वी.के.शर्मा, श्री राजीव गुप्ता, श्री निरंजन शर्मा एवं श्री अनिल गोयल।

द्वितीय पंक्ति, बायें से :

सुश्री मीनाक्षी अग्रवाल, श्रीमती भगवती गोयल, श्री विशाल चोपड़ा, श्रीमती कृष्णादेवी अग्रवाल, श्रीमती प्राची अग्रवाल, श्री महावीर गोयल, श्रीमती अनीता शर्मा, साध्वी शिरोमणि जी, श्रीमती सीमा शर्मा, साध्वी सत्यसमिधा जी, श्री सुभाष जग्गा, श्री आनंद कानडकर, श्रीमती सीमा नेगी, श्रीमती शांतिदेवी अग्रवाल, श्रीमती विभूति शर्मा, श्री राघव गुप्ता, श्रीमती मंजू शर्मा एवं श्री राजेश मिश्रा

जीवन संघर्षों के बीच मातृशक्ति की अनुपम प्रेरणा

भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु

जीवन परिचय

भारत गणराज्य की पन्द्रहवीं महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का जीवन संघर्ष, समर्पण, शिक्षा और सेवा की प्रेरक गाथा है, जो एक सुदूर आदिवासी गाँव से राष्ट्रपति भवन तक पहुँचने का अनुपम उदाहरण है।

आपका जन्म 20 जून 1958 को ओडिशा राज्य के मयूरभंज जिले स्थित उपरबेड़ा गाँव के एक संथाल आदिवासी परिवार में हुआ था। यह क्षेत्र भारत के सबसे पिछड़े और दूरदराज इलाकों में से एक है। आपके पिताजी श्री बिरंदबीप नारायण टुडू किसान और गांव के सरपंच रहे। माताजी श्रीमती सिंगो टुडू गृहिणी रहीं। यह परिवार अत्यन्त ही गरीबी और सीमित संसाधनों में रहा। द्रौपदी जी अपने गाँव की ऐसी पहली बेटी थीं, जिन्होंने मैट्रिक पास करके विश्वविद्यालय की डिग्री प्राप्त की।

आपकी प्राथमिक शिक्षा उपरबेड़ा प्राथमिक विद्यालय में तथा उच्चतर माध्यमिक शिक्षा भुवनेश्वर में हुई। वर्ष 1979 में आपने रामादेवी महिला महाविद्यालय, भुवनेश्वर से राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र में बी.ए. डिग्री प्राप्त की। वे अपने गाँव की पहली बेटी रहीं जिन्होंने महाविद्यालयीन शिक्षा पूर्ण की।

वर्ष 1979 से 1983 तक आपने ओडिशा के सिंचाई एवं विद्युत विभाग में जूनियर असिस्टेंट के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। वर्ष 1980 में श्री श्यामचरण मुर्मू (बैंक अधिकारी) से आपका विवाह हुआ।वर्ष 1994 से 1997 तक आप रायरंगपुर में श्री अरबिंदो इंटीग्रल एजुकेशन एंड रिसर्च सेंटर में शिक्षिका के रूप में कार्यरत रहीं।

संतानों के रूप में आपको दो पुत्र लक्ष्मण तथा सिपुन एवं पुत्री इतिश्री की प्राप्ति हुई। जीवन के सबसे कठिन समय वर्ष 2009 से 2014 के बीच उन्होंने अपने दोनों पुत्रों एवं पति को खो दिया। नियति के इस क्रूर चक्र में उनका जीवन दुःखों से भर उठा था परन्तु फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और स्वयं को सार्वजनिक जीवन में सक्रिय किया। समाजसेवा के पथ पर चलते हुए वे भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ता के रूप में पार्षद, राज्य भाजपा अनुसूचित जनजाति मोर्चा अध्यक्ष, रायरंगपुर क्षेत्र से विधायक पद तक पहुँचीं।

वर्ष 2002 से 2004 तक वे ओडिशा की राज्यमंत्री रहीं। आपको ओडिशा विधानसभा द्वारा सर्वश्रेष्ठ विधायक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्ष 2015 से 2021 तक आप झारखंड की नौवीं राज्यपाल रहीं। एक आदिवासी बहुल राज्य की पहली महिला आदिवासी राज्यपाल के रूप में आप अपने पाँच वर्ष के कार्यकाल को पूरा करने वाली पहली राज्यपाल भी रहीं।

25 जुलाई 2022 को आपने भारत की पन्द्रहवीं महामहिम राष्ट्रपति के रूप में शपथ ग्रहण करते हुए भारत की मातृशक्ति को गौरवान्वित किया।

राष्ट्रपति के रूप में आपकी ऐतिहासिक उपलब्धियाँ :

- भारत की पहली आदिवासी (जनजातीय) राष्ट्रपति
- दूसरी महिला राष्ट्रपति
- स्वतंत्र भारत में जन्मी पहली राष्ट्रपति
- सबसे कम उम्र की राष्ट्रपति

वे आदिवासी समुदाय के कल्याण कार्यों, महिलाओं के सशक्तिकरण, शिक्षा, पर्यावरण और लोकतांत्रिक मूल्यों को सशक्त करने के अपने योगदान हेतु जानी जाती हैं। राष्ट्रपति के रूप में वे विभिन्न पुरस्कार समारोहों (जैसे अशोक चक्र, राष्ट्रीय पुरस्कार आदि) की अध्यक्षता करती हैं और देश-विदेश के प्रवासों पर जाती हैं।

भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी की सादगी, दृढ़ता और सेवा भावना सराहनीय है। उन्होंने हमेशा वंचित, पिछड़े और आदिवासी वर्गों के उत्थान पर जोर दिया। उनका जीवन सिद्ध करता है कि शिक्षा, इच्छाशक्ति और समर्पण से कोई भी बाधा पार की जा सकती है।

वात्सल्य दर्शन ने उन्हें भावविभोर किया

– दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी का वात्सल्य ग्राम में प्रवास एक अत्यन्त ही भावपूर्ण कार्यक्रम रहा। ओडिशा के एक सुदूर गाँव में जन्म लेने के बाद अनेक संघर्षों के बीच उनकी जो जीवन यात्रा रही, वो मुझे बहुत प्रभावित करती है। मेरा उनसे बहुत ही आत्मीयतापूर्ण नाता है। उनका वात्सल्य ग्राम में शुभागमन हम सबके लिए बहुत ही गौरव का क्षण था। यद्यपि उनका यहा कोई सार्वजनिक उद्‌बोधन नहीं रहा परन्तु वात्सल्य ग्राम का भ्रमण करते हुए मैंने उन्हें यहाँ संचालित हो रहे सभी सेवा प्रकल्पों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने कहा कि –'वात्सल्य ग्राम का कार्य बहुत हृदयस्पर्शी है। नन्हें नवजात बच्चों से लेकर वृद्धा माताओं तक की सेवा का यह कार्य बहुत ही प्रेरणादायी हैं। वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन का 'संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल' भारत में बेटियों का पहला सैनिक स्कूल है यह जानकर उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई। वात्सल्य ग्राम में निर्माणाधीन सांस्कृतिक महातीर्थ श्री सर्वमंगला पीठम् के माध्यम से चारों युगों में नारी गौरव की पुनर्प्रतिष्ठा होगी, यह जानकर वे आनंद से भर उठीं। मैंने जब उन्हें अपने पूज्य गुरुदेव के बारे में बताया कि वो अपने शिष्यों में सन्त और सिपाही दोनों को गढ़ते हैं तो उन्होंने कहा कि ये इस युग की मांग है।

माँ सर्वमंगला मंदिर की गुफा में प्रवेश करते हुए वे आनंद विभोर थीं। कहने लगीं कि मैं मंदिर का निर्माण पूर्ण हो जाने के बाद इसका उद्‌घाटन करने आऊंगी। रक्त से निर्मित क्रांतिकारियों की यशोगाथा और वात्सल्य ग्राम के प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय में सम्पन्न होने वाले निःशुल्क मोतियाबिंद ऑपरेशन शिविरों के बारे में जानकर भी उन्हें बहुत अच्छा लगा। कहने लगीं कि आप बहुत अच्छे कार्य कर रहीं हैं और बहुत वर्षों से मेरी बहुत इच्छा थी वात्सल्य ग्राम को देखने की। तो आज यहाँ आकर बहुत अच्छा लगा।

कृष्णा ब्रम्हरतन विद्या मंदिर की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में भावविभोर महामहिम

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में अभावग्रस्त परिवारों के बच्चों हेतु संचालित 'कृष्णा ब्रम्हरतन विद्या मंदिर' की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को निहारते हुए महामहिम राष्ट्रपति महोदया। यहाँ रुकना उनके कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं था परन्तु बच्चों का उत्साह देखकर वे अभीभूत हुईं और गोल्फ कार्ट से उतरकर मंच तक गईं और उन्हें अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

सुश्री सुमनलता जी संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल की ओर से महामहिम राष्ट्रपति महोदया का अभिनंदन करते हुए

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी महामहिम राष्ट्रपति महोदया का अभिनंदन करते हुए

महामहिम के वात्सल्य ग्राम से प्रस्थान की भावपूर्ण बेला

वात्सल्य प्रकाशन *की प्रस्तुतियाँ...*

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन विचारों से युक्त साहित्य परमशक्ति पीठ के 'वात्सल्य प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित किया जाता है, जो आपको जीवन की अनेक समस्याओं के सरल समाधान देता है। आप भी इन पुस्तकों को पढ़कर अपना जीवन सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर सकते हैं।

वात्सल्य साहित्य

01. आत्मसुख की ओर
02. सद्गुरु - बन्धनों के मुक्तिदाता
03. योग - सफल जीवन का रहस्य
04. सार्थक जीवन के सूत्र
05. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते
06. जीवन का परमानन्द
07. साधना के पथ पर
08. जागो भारत की नारी
09. सद्गुरु - जीवन की आवश्यकता
10. माँ - सृष्टि की धुरी
11. मुझे बचाओ माँ
12. परमशक्ति योग (हिन्दी)
13. परमशक्ति योग (अंग्रेजी)
14. यशोदा भाव - वात्सल्य ग्राम की मूल प्रेरणा
15. अनुभूति
16. पाथेय
17. व्यक्तित्व और विचार
18. मेरी स्मृतियों के भानु भैया
19. शुभाशीष
20. युगपुरुष की युगयात्रा
21. पिबत भागवतं रसमालयम्
22. नया सवेरा लाओ (काव्य संग्रह)
23. साधना के स्वर (भजन संग्रह)
24. भजन वर्षा (भजन संग्रह)
25. मेरी छोटी सी है नाव (भजन संग्रह)
26. वात्सल्य
27. श्रीमद्भगवद्गीता
28. निरामय प्राकृतिक चिकित्सा

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भराजी के बाल्यकाल और श्रीरामजन्मभूमि संघर्ष की रोचक गाथा

साध्वी ऋतम्भरा और श्रीरामजन्मभूमि आंदोलन

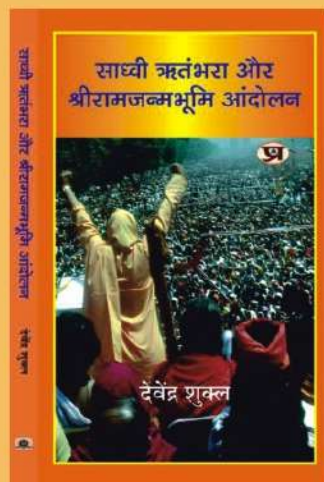

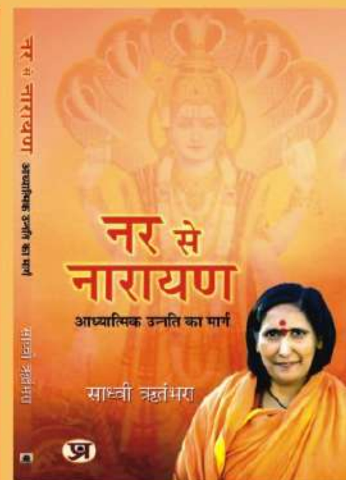

ये दोनों पुस्तकें www.prabhatbooks.com पर ऑनलाइन ऑर्डर करके घर बैठे मंगवाई जा सकती हैं

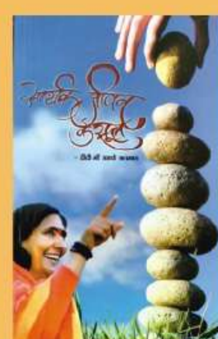

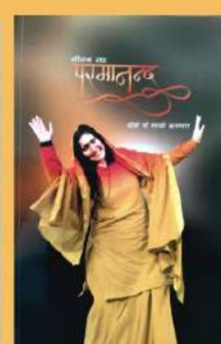

उपरोक्त साहित्य मंगवाने के लिए आप 'परमशक्ति पीठ' के निम्न पतों अथवा फोन नंबर्स पर सम्पर्क कर सकते हैं।

केन्द्रीय कार्यालय

परमशक्ति पीठ
लव-102, अग्रसेन आवास, 66 इन्द्रप्रस्थ विस्तार,
नई दिल्ली-110092
सम्पर्क फोन नं.-01122238751, 9958885858
ईमेल-info@vatsalyagram.org
वेबसाइट-www.vatsalyagram.org

शाखा कार्यालय

वात्सल्य ग्राम
मथुरा-वृन्दावन मार्ग,
पोस्ट-प्रेमनगर
वृन्दावन, जिला-मथुरा (उत्तरप्रदेश) पिन-281003
सम्पर्क फोन नंबर-9412777151

परमशक्ति पीठ के सेवा प्रकल्प

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन

के विभिन्न प्रकल्पों हेतु
आपके आर्थिक सहयोग का स्वागत है

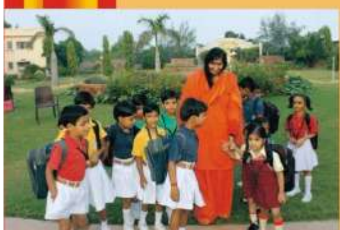

परमशक्ति पीठ में आपका सहयोग

आजीवन सहयोगी	1,00,000/-
संस्थापक सहयोगी	5,00,000/-
कार्पोरेट सहयोगी	11,00,000/-

वत्सल निधि में आपका सहयोग

शिक्षा निधि (वार्षिक)	6000/-
वत्सल निधि (एक सुविधा) वार्षिक	24,000/-
वत्सल निधि (शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन, होस्टल, अन्य) वार्षिक	1,20,000/-
बच्चों का एक समय का भोजन	21,000/-

वैशिष्ट्यम् स्कूल (दिव्यांग बच्चों हेतु) में आपका सहयोग

दिव्यांग बच्चों की समुचित देखभाल हेतु (वार्षिक)	1,50,000/-

चिकित्सा सेवाओं में आपका सहयोग

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय में आयोजित होने वाले निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविरों हेतु (एक रोगी के ऑपरेशन हेतु)	3000/-
ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित होने वाले निःशुल्क स्वास्थ्य शिविरों हेतु (प्रति शिविर)	51,000/-

श्री सर्वमंगला पीठम् में आपका सहयोग

संस्थापक सहयोगी	5,00,000/-
एक शिला सहयोगी	1100/-

गौ सेवा में आपका सहयोग

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन की 'कामधेनु गौगृह गौशाला' हेतु

प्रति गौमाता सहयोग (मासिक)	3100/-
प्रति गौमाता सहयोग (वार्षिक)	36,000/-
गौवंश हेतु भूसा सहयोग (दैनिक)	11,000/-
गौवंश हेतु हरा चारा सहयोग (दैनिक)	5100/-
गौ दान राशि	50,000/-

Param Shakti Peeth

Vatsalya Gram, Vrundavan

Your Donetion is welcome for our various service projects

Your Donation for Param Shakti Peeth

Life Member	1,00,000/-
Founder Member	5,00,000/-
Corporate Member	11,00,000/-

Your Donation for Vatsal Nidhi

Shiksha Nidhi (Annual)	6000/-
Vatsal Nidhi (For one facility) Annual	24,000/-
Vatsal Nidhi (Education, Health, Meal, Hostel etc.) Annual	1,20,000/-
One time meal for children	21,000/-

Your Donation for Vaishishtyam school

For proper care of disabled children (Annual)	1,50,000/-

Your Donation for Medical Services

• For cataract operation camps to be organized at Premvati Gupta Eye Hospital, Vatsalya Village] Vrindavan (For operation of one pataint)	3000/-
• For free health camps to be organized in rural areas	51,000/-

Your Donation for Shri Sarvmangla Peetham

Founder Member	5,00,000/-
One Brick donation	1100/-

Your Donation for Cow Shed

For Kamdhenu Gaugruh Gaushala of Vatsalya Gram

For One cow (Monthly)	3100/-
For One cow (Yearly)	36,000/-
Straw for cattle (Daily)	11,000/-
Green fodder cooperation for cattle (Daily)	5100/-
Cow donation fund	50,000/-

वात्सल्य ग्राम के साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद

परमशक्ति पीठ के सेवाकार्यों में आप अपना सहयोग इस प्रकार दे सकते हैं :

बैंक खातों में सीधे जमा करने के लिए जानकारियाँ

बैंक का नाम : पंजाब नेशनल बैंक
खाता क्रमांक : 1518000101014134
आई.एफ.एस.सी. कोड : PUNB0151800

बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इन्डिया
खाता क्रमांक : 10137296689
आई.एफ.एस.सी.कोड : SBIN0007085

दान के लिए ऑनलाइन लिंक :
https://www.vatsalyagram.org/donate

ऑनलाइन दान के लिए कृपया इन क्यू.आर.कोड्स को स्केन करें

चेक अथवा डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भी दान राशि परमशक्ति पीठ कार्यालय में भेजी जा सकती है।

आपका सहयोग आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

प्रधान कार्यालय का पता :

परमशक्ति पीठ

लव–102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, पटपड़गंज, नई दिल्ली –110092
सम्पर्क सूत्र : 011-22238751, 9999971714, 9999971716
ईमेल : donorcare@vatsalyagram.org वेबसाइट : www.vatsalyagram.org

योगदान प्रपत्र

जी हाँ, मैं वात्सल्य ग्राम के सेवा प्रकल्पों में अपना योगदान देना चाहता हूँ / चाहती हूँ। मेरा व्यक्तिगत विवरण इस प्रकार है।

श्री/श्रीमती/कुमारी ______________________________

व्यवसाय ______________

पता ______________________________

______________ पिनकोड __________

सम्पर्क फोन नंबर ______________

ईमेल आई.डी. ______________________________

दान राशि (अंकों में) __________ (शब्दों में) ______________________

परमानेंट अकाउंट नंबर (PAN) ______________________

अंतरिक्ष यात्री कैसे बनें

एस्ट्रोनॉट का करियर बहुत ही रोमांचक और चुनौतियों भरा होता है। अगर आप भी नासा में एस्ट्रोनॉट बनना चाहते हैं तो यहाँ हम आपको बताएंगे कि कैसे बना जा सकता है एस्ट्रोनॉट और क्या होती है उसकी सैलेरी। इसके लिए एयरोस्पेस इंजीनियरिंग, अंतरिक्ष विज्ञान, सैन्य विमानन या परीक्षण पायलटिंग, रोबोटिक्स, चिकित्सा या भौतिकी जैसे क्षेत्रों में गहन विशेषज्ञत्ता की जरूरत होती है। नासा (नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन, अमेरिका) में एस्ट्रोनॉट बनने के लिए किसी मान्यता प्राप्त संस्थान से साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग और मैथेमेटिक्स क्षेत्र में डिग्री होनी जरूरी है। मास्टर्स में इंजीनियरिंग, जैविक विज्ञान, भौतिक विज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान या गणित विषय होना चाहिए। कम-से-कम तीन वर्षों का संबंधित क्षेत्र में अनुभव या पायलट-इन-कमांड के रूप में 1,000 घंटे बिताए हों।

अंतरिक्ष यात्री बनने के लिए योग्यताएँ

किसी मान्यता प्राप्त संस्थान से इंजीनियरिंग, जैविक विज्ञान, भौतिक विज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान या गणित सहित मास्टर डिग्रीधारी होना चाहिए।

कम-से-कम तीन वर्ष का संबंधित व्यावसायिक अनुभव प्राप्त किया हो अथवा पायलट-इन-कमांड के 1,000 घंटे, जिनमें से कम से कम 850 घंटे पायलटों के लिए उच्च प्रदर्शन वाले जेट विमान में सम्मिलित हों।

संबंधित विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग या गणित क्षेत्र में डॉक्टरेट कार्यक्रम के लिए दो वर्ष का कार्य अनुभव।

डॉक्टर ऑफ मेडिसिन, ऑस्टियोपैथिक मेडिसिन, या संबंधित चिकित्सा डिग्री पूरी की हो।

राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त परीक्षण पायलट स्कूल कार्यक्रम को पूर्ण किया हो।

कितना मिलता है वेतन

नासा की वेबसाइट पर वर्ष 2024 के प्रत्येक अंतरिक्ष यात्री वेतन के रूप में 1,52,258 डॉलर (भारतीय रुपये में 1,27,75,968.78 रुपये) प्रतिवर्ष सूचीबद्ध किया गया है। अंतरिक्ष यात्री बनने में लगभग दस वर्षों का समय लग सकता है। इसमें चार वर्ष कॉलेज में, दो वर्ष मास्टर डिग्री के लिए, दो वर्ष अनुभव के लिए और दो वर्ष नासा अंतरिक्ष यात्री कोर में शामिल होने के लिए लगते हैं।

कैसे होता है चयन

नासा का अंतरिक्ष यात्री चयन बोर्ड आवेदनों की समीक्षा करता है और प्रत्येक उम्मीदवार की योग्यता का आकलन करता है। इसके बाद, बोर्ड सबसे योग्य उम्मीदवारों के एक छोटे समूह को ह्यूस्टन, टेक्सास स्थित नासा के जॉनसन स्पेस सेंटर में साक्षात्कार के लिए आमंत्रित करता है। साक्षात्कार में शामिल उम्मीदवारों में से लगभग आधे को दूसरे साक्षात्कार के लिए वापस बुलाया जाता है। उस समूह में से, नासा के नए अंतरिक्ष यात्री उम्मीदवारों का चयन किया जाता है। वे जॉनसन में प्रशिक्षण के लिए रिपोर्ट करते हैं और अगले दो साल अंतरिक्ष में चहलकदमी, अंतरिक्ष स्टेशन का संचालन, टी-38 जेट विमान उड़ाना और रोबोटिक भुजा को नियंत्रित करने जैसे बुनियादी अंतरिक्ष यात्री कौशल सीखते हैं।

इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पर जाने वाले पहले भारतीय ग्रुप कैप्टन शुभांशु के बारे में

- ग्रुप कैप्टन सुधांशु शुक्ला भारतीय वायु सेना के एक वरिष्ठ परीक्षण पायलट और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अंतरिक्ष यात्री हैं। वे भारत के दूसरे अंतरिक्ष यात्री और अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर जाने वाले पहले भारतीय हैं।
- उन्होंने राष्ट्रीय रक्षा अकादमी पुणे से शिक्षा प्राप्त की।
- वर्ष 2006 में वे भारतीय वायु सेना में शामिल हुए।
- वे एक अनुभवी फाइटर पायलट के रूप में उन्हें मिग, सुखोई, जगुआर, हॉक और डॉर्नियर विमानों को उड़ाने का दो हजार घंटों का अनुभव है।
- बाद में वे टेस्ट पायलट बने और फाइटर कॉम्बैट लीडर के रूप में काम किया।
- 2019 में इसरो के गगनयान (भारत का पहला मानवयुक्त अंतरिक्ष मिशन) कार्यक्रम के लिए चार भारतीय वायु सेना पायलटों में से वे चुने गए।
- फरवरी 2024 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा सार्वजनिक रूप से उन्हें गगनयान अंतरिक्ष यात्रियों के रूप में घोषित किया गया।
- उन्होंने रूस के यूरी गगारिन कोस्मोनॉट ट्रेनिंग सेंटर और नासा के जॉनसन स्पेस सेंटर में प्रशिक्षण लिया।
- 25 जून 2025 को नासा के कैनेडी स्पेस सेंटर से रॉकेट द्वारा अंतरिक्ष की ओर लांच किये गए।
- अपने अंतरिक्ष मिशन की सम्पूर्ण अवधि के बीस दिनों में शुंभाशु शुक्ला ने अनेक वैज्ञानिक अनुसंधानों को पूरा किया।
- 15 जुलाई 2025 को कैलिफोर्निया तट के पास सफल स्प्लैशडाउन के साथ उनकी पृथ्वी पर वापसी हुई।
- 26 जनवरी 2026 को भारत की माननीया राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु द्वारा उन्हें 'अशोक चक्र' से सम्मानित किया गया।

श्री मंगलनाथर मंदिर

रामनाथपुरम् (तमिलनाडु)

देवी उत्तराकोसमंगई परम पवित्र श्री मंगलनाथर स्वामी मंदिर तमिलनाडु के रामनाथपुरम जिले में स्थित एक अत्यंत प्राचीन और पवित्र शिव मंदिर है। यह मंदिर श्री मंगलनाथर (मुख्य देवता, शिव के रूप में) और उनकी पत्नी श्री मंगलेश्वरी (या मंगलाम्बिकाई) को समर्पित है। यह मंदिर लगभग ३००० वर्ष पुराना माना जाता है और दुनिया के सबसे प्राचीन शिव मंदिरों में से एक गिना जाता है। कुछ मान्यताओं के अनुसार यह सबसे पहला शिव मंदिर भी हो सकता है। मंदिर का क्षेत्रफल करीब २० एकड़ है। किंवदंती के अनुसार, भगवान शिव ने इसी पवित्र स्थल पर देवी पार्वती को वेदों और प्रणव मंत्र (ॐ) के गुप्त रहस्यों का उपदेश दिया था। इसी वजह से इसे 'दिव्य रहस्यों का पवित्र स्थान' कहा जाता है। मंदिर के मुख्य देवता मंगलनाथर को इलंधई वृक्ष से स्वयं प्रकट हुआ माना जाता है। यहाँ छह फीट ऊँची मरगत नटराजर (पन्ना/एमरल्ड से बनी नटराज की दुर्लभ मूर्ति) का दिव्य दर्शन होता है। मंदिर में कई छोटे-बड़े मंदिर हैं, जैसे नटराजर, भैरव, दक्षिणामूर्ति आदि। मंदिर का निर्माण और जीर्णोद्धार पांड्य राजाओं द्वारा किया गया। अच्युतप्प नायक, मुथुवीरप्प नायक और सेथुपति वंश के राजाओं द्वारा किया गया। मणिक्कवासगर और अरुणगिरिनाथर जैसे संतों ने इस मंदिर की महिमा गाई है। यह मंदिर रामेश्वरम् से लगभग 83 कि.मी. और रामनाथपुरम् से करीब 18 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

पात्र—अपात्र

लघुकथा

– रमेश रंजन त्रिपाठी

सुशील ने असहाय लग रहे बुजुर्ग को सड़क पार करने में सहायता कर दी। दुसरे छोर पर पहुँचते ही एक युवक आ धमका। उसने बुजुर्ग का हाथ थामा और उनके कमीज की जेब टटोलते हुए सुशील पर चिल्लाया –'तुमने मेरे बाबा की जेब में रखे सौ रुपए निकाल लिए हैं, वापस करो।'

सुशील हक्का-बक्का रह गया, बोला –'क्या कहते हो भाई! मैं तो इनकी मदद कर रहा था। मैं चोर नहीं हूँ।'

'तो जो सौ रुपए मैंने इनकी जेब में रखे थे, कहाँ गए?' युवक ने ऊँची आवाज में सुशील को भला-बुरा कहना शुरू कर दिया। लोग इकट्ठा हो गए। कोई बोला कि सुशील की तलाशी लो और पैसे वापस दिला दो। उत्साही भीड़ सुशील को पकड़कर तलाशी लेने लगी। उसकी जेब में दस का एक मुड़ा-तुड़ा नोट मिला। युवक के झूठ की पोल खुल चुकी थी। अब भीड़ युवक की ओर मुड़ी। लगा कि लोग उसे पीटेंगे, तभी सुशील ने सबको रोक दिया और बोला –'मेरी तरह यह भी गरीब है, लेकिन पैसों के लिए बेईमानी ठीक नहीं। यदि यह नौजवान भविष्य में किसी को न ठगने का वादा करे, तो माफ कर दें।' युवक ने वादा किया और बुजुर्ग के साथ चला गया।

सुशील कुछ दूर गया था कि एक भद्र पुरुष से भेंट हो गई। दोनों बातचीत करने लगे। भद्र ने कहा –'मैंने अभी की घटना देखी है। तुम सज्जन और ईमानदार हो। काम की तलाश कर रहे हो। मैं तुम्हारी सहायता करना चाहता हूँ।'

सुशील खुश हो गया। भद्र बोला –'मेरे आलीशान मकान में सोने-चाँदी के बेईमान घड़ों की भरमार है। धीरे-धीरे वे साधारण मिट्टी के ईमानदार पात्रों को निगलते जा रहे हैं। तुम्हें ईमानदारी के बचे हुए पात्र की देखभाल करने का काम दे सकता हूँ। इसके बदले में तुम्हारा साधारण तरीके से जीवन यापन होने लगेगा।'

'मैं तैयार हूँ', – सुशील तुरंत तैयार हो गया।

'यह पात्र यूँ तो खाली होगा लेकिन हर रोज तुम्हारे गुजारे लायक धन इसमें मिल जाया करेगा।' भद्र ने समझाया –'एक शर्त भी जुड़ी है कि बेईमान घड़े वाले महल में तुम्हें ईमानदारी की पात्रता को हरदम अपनी गोद या हाथों में सहेजकर रखना होगा। पात्र को खुद से अलग करते ही वह तुमसे दूर हो जाएगा और तुम्हारा काम भी छिन जाएगा।'

सज्जन सुशील को उसका मनपसंद काम मिल रहा था, वह तुरंत मान गया। बेईमानी के भवन में वह ईमानदारी की पात्रता को बड़े चाव से सहेजने लगा। उसे बहुत अच्छा लग रहा था। फिर, लगातार पात्र को थामे रहने से उसके हाथों में दर्द होने लगा। गोद में रखना भारी हो चला। पीड़ा और बेचैनी धीरे-धीरे बढ़ने लगी। दिन, हफ्ते बीतते-बीतते परेशानी ने बड़ा रूप धारण कर लिया। महीनों में यह बेचैनी असह्य हो गई। बर्दाश्त से बाहर होने पर सुशील ने अपने पात्र को छोड़ा और हीरे-जवाहरात से भरा सोने का घड़ा उठाकर घर आ गया।

चोरी और कपट से मिले घड़े के धन को सुशील गिनने लगा। गहने-सिक्के खाली करते ही घड़े में अड्डा बनाकर छिपा हुआ नाग बाहर आ गया। जब तक सुशील संभलता, नाग उसे डँस चुका था।

एम्बुलेंस में अस्पताल जाते हुए अर्धमूर्छित सुशील ने भद्र पुरुष को चौराहे पर खड़ा देखा, जो शायद फिर किसी सुशील की तलाश कर रहा था।

चैत्र नवरात्रि महोत्सव
वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन

वात्सल्य ग्राम वृन्दावन स्थित श्री सर्वमंगला माता गुफा मंदिर में चैत्र नवरात्रि का नौ दिवसीय महोत्सव अत्यन्त ही श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी द्वारा विशेष अनुष्ठान सम्पन्न किये गए। मंगल मानस परिसर में यज्ञानुष्ठान हुआ। गोकुलम् परिसर में श्रीरामचरित मानस के नवान्ह पारायण वात्सल्य परिवार द्वारा किये गए। गुफा मंदिर में कन्या पूजन एवं कन्या भोज के साथ ही इस महोत्सव का समापन हुआ।

या देवी सर्वभूतेषु सर्व रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमतस्यै नमो नमः॥

नि:शुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविर

कर्मयोगी जहाँ खड़ा हो जाए वहीं तीर्थ स्थान बन जाता है

-दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

वृन्दावन.

विगत 28 और 29 मार्च को वात्सल्य ग्राम स्थित 'प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय' में दो दिवसीय मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविर आयोजित हुआ। पूर्ण रूप से नि:शुल्क रहे इस शिविर का आयोजन स्व.श्रीमती सुनीता रामपाल की पुण्य स्मृति में मुम्बई निवासी श्री विजय रामपाल द्वारा किया गया।

इसके पूर्व नेत्र परीक्षण में आठ जिलों के 304 मोतियाबिन्द रोगियों को ऑपरेशन के लिए चयनित किया गया। मुम्बई के ख्यातनाम नेत्र रोग विशेषज्ञ एवं सर्जन डॉ.श्याम अग्रवाल के नेतृत्व में डॉ.जुगल शाह, डॉ.आनंद जयपुरिया, डॉ. मयूर अग्रवाल, डॉ.राहुल जैन, डॉ.विशाल राठौर, डॉ.अनुज बहुआ, डॉ.आरती अग्रवाल एवं डॉ.सौरभ रामुका द्वारा ये सभी ऑपरेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न किये गए। उल्लेखनीय है कि पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी की पावन प्रेरणा से विगत दो दशकों से भी अधिक समय से ये शिविर आयोजित किये जा रहे हैं, जिनके माध्यम से हजारों की संख्या में मोतियाबिन्द रोगियों को नूतन नेत्रज्योति प्राप्त हुई है।

शिविर का समापन समारोह 29 मार्च को पूज्या दीदी माँ जी के पावन सानिध्य एवं ज़ी मीडिया समूह के संस्थापक श्री सुभाष चन्द्रा के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। विशिष्ट अतिथि के रूप में सुप्रसिद्ध भागवत प्रवक्ता डॉ.मनोज मोहन शास्त्री ने मंच को सुशोभित किया।

पूज्या दीदी माँ जी ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि -'नर से नारायण बनने का एकमात्र उपाय सेवा मार्ग ही है। भूखे को भोजन कराना किसी यज्ञ से कम नहीं होता। एक सक्षम व्यक्ति यदि किसी एक अक्षम का हाथ पकड़ ले तो कोई भूखा नहीं रहेगा। व्यक्ति तीर्थ यात्रा करने को ही श्रेष्ठ मानता है किन्तु यदि हम अपने कार्य को कर्मयोग बना लें, तो हम जहाँ खड़े हैं, वहीं तीर्थ बन जाएगा। जब हम अपने कार्य में तन्मय हो जाते हैं तो हमारा स्नान भी अभिषेक बन जाता है। ईश्वर अपने भक्त के मन में उत्पन्न नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट कर देते हैं भगवान अपने भक्त के भीतर पनप रहे दोषों का शमन कर देते हैं, अभिमान को नष्ट कर देते हैं। दूसरों को प्रेम और सम्मान देने से बड़ा कोई उपहार नहीं होता और हमें किसी व्यक्ति के अंदर दोष न देखकर केवल उसके गुणों को देखना चाहिए।'

समारोह के मुख्य अतिथि श्री सुभाष चन्द्रा ने कहा कि -'एक अन्तराल के बाद वात्सल्य ग्राम में हमारा आना हुआ है। वात्सल्य में जो प्रकल्प संचालित हैं, उन्हे देखकर मन प्रसन्न हो गया। विशेषकर, दीदी माँ जी ने बेटियों के लिए सैनिक स्कूल देकर बहुत सराहनीय कार्य किया है उनका मार्गदर्शन हमको सदैव मिलता रहे।'

विशिष्ट अतिथि डॉ. मनोज मोहन शास्त्री ने समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि -'सन्तों के सानिध्य में जब सेवा करने का अवसर मिल जाए, तो इससे अच्छा और क्या होगा। आप सभी की आँखों को नूतन ज्योति प्राप्त हुई, अब इन आँखों से शुभता का दर्शन कर अपने जीवन को कल्याणकारी बनाएँ।'

इस अवसर पर पूज्या दीदी माँ जी ने भारत के सबसे पुराने टेलीविजन चैनल और ज़ी मीडिया समूह के अध्यक्ष श्री सुभाष चन्द्रा का अभिनंदन किया। आयोजन में श्रीमती सुशीला चन्द्रा, श्री महेश खण्डेलवाल एवं श्री महेश गर्ग की विशेष उपस्थिति रही। सम्पूर्ण आयोजन में शिविर संयोजिका सुश्री मीनाक्षी अग्रवाल के साथ श्री रमाकान्त शर्मा, श्री महेन्द्र सिंह एवं वैशिष्ट्यम् परिवार का विशेष सहयोग रहा। मंच संचालन डॉ. उमाशंकर 'राही' ने किया।

नि:शुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविर समापन समारोह का प्रतिष्ठित मंच

दीदी माँ की जो आज्ञा होगी, ज़ी मीडिया समूह उसका पालन करेगा

-सुभाष चन्द्रा
(अध्यक्ष-ज़ी मीडिया समूह)

प्रातःस्मरणीया दीदी माँ जी, आदरणीय शास्त्री जी , डॉ.श्याम जी, विजय जी रामपाल, सभी डॉक्टर गण और इस सभा में उपस्थित सभी माताओं बहनों भाइयों, आज मैं यहाँ वात्सल्य ग्राम में लगभग बाईस वर्षों के बाद आया हूँ। दिन के चौबीस घण्टों में तीन-चार घण्टों को छोड़कर दीदी माँ हमेशा ही समाज सेवा के किसी-न-किसी कार्य में लगी ही रहती हैं। आज यहाँ मुझे उनका आशीर्वाद मिला, उसके लिए भी मैं गदगद हूँ। परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि वे उनको अच्छी सेहत और लम्बी आयु दें, ताकि वे हम सबका मार्गदर्शन भी करती रहें और जो सुंदर काम हैं, वह करती रहें।

मेरा दीदी माँ से लगभग बत्तीस वर्ष पहले संपर्क हुआ था। तब उनका एक प्रवचन किसी शहर में होने जा रहा था तो जी टीवी पर सुबह-सुबह के समय 'जागरण' करके कार्यक्रम शुरू हुआ था, उस पर दीदी माँ का प्रवचन और कथा को पूरे देश ने देखा था। उस समय के संपर्क से लेकर के आज तक उनके प्रति मन में श्रद्धा का भाव हमेशा बना रहा। ऐसे ही आपका प्रेम मुझ पर और मेरे परिवार पर बना रहे, यह भी एक परमात्मा से प्रार्थना है।

डॉ.श्याम जी के साथ मुंबई में सैकड़ों कार्यक्रम में मिलना होता रहा है। यहाँ आने के लिए ये मुझसे लम्बे समय से कहते आए लेकिन संजोग आज का बनना था। तो मैं श्याम जी का अपने मन से बहुत-बहुत आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे यह अवसर दिया। यहाँ पिछले बाईस वर्षों में प्रतिवर्ष नौ बार ऐसे शिविर लगते हैं। जहाँ प्रति शिविर तीन सौ लोगों की एवरेज में सब नेत्र चिकित्सा की जाती हो और यदि कोरोना काल नहीं होता तो लगभग एक लाख लोगों का ऑपरेशन यहाँ अब तक हो चुका होता। तो आप अंदाजा लगा सकते हैं कि कितना कार्य बड़ा कार्य डॉ. श्याम जी की तरफ से देश को समाज के लिए यहाँ किया जा रहा है। आपने अपनी बेटी और दामाद सहित पूरे परिवार को भी राष्ट्र की सेवा में लगाया हुआ है। आप धन्यवाद के पात्र हैं।

आज वात्सल्य ग्राम में दीदी माँ जी के साथ मैंने कई सेवा प्रकल्पों का दर्शन किया। विशेषकर जो लड़कियों के लिए सैनिक स्कूल इस देश में एक पहला प्रयास आपने किया, वो बहुत ही प्रेरणादायक है और सराहना के काबिल है। नारी शक्ति के लिए आप अभी जो प्रकल्प शुरू करने जा रही हैं, मैं आपको आश्वासन देता हूँ कि ज़ी मीडिया समूह की तरफ से या मेरी अपनी तरफ से जो कुछ भी आपकी आज्ञा होगी, उस प्रकल्प में मैं पूरा साथ दूंगा। आज वात्सल्य ग्राम से मेरा एक नया रिश्ता भी बना है। वात्सल्य ग्राम भ्रमण के दौरान मैं एक परिवार मिला, जिसके चार बच्चों ने मुझे 'मामा' की संज्ञा दी। उन्होंने मामा का संबंध बनाया तो मैं परमात्मा से प्रार्थना करूंगा कि उन चारों बच्चों के मामा का फर्ज निभा सकूँ। उनकी शादी-ब्याह सहित उनके सब कामों में मैं पूरा कर सकूँ, ऐसा आशीर्वाद दीदी माँ आपसे चाहूंगा। संजय भैयाजी ने पूरे वात्सल्य ग्राम का हमें अवलोकन कराया, इसके लिए भी मैं उनका बड़ा आभारी हूँ। डॉ.श्याम जी माध्यम बने और दीदी माँ के भी आज दर्शन हुए। मुझे और मेरी पत्नी को यहाँ दीदी माँ जी का इतना प्यार मिला, उसके लिए मैं उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

वात्सल्य परिवार के बीच श्री सुभाष चन्द्रा

श्री सुभाष चन्द्रा का अभिनंदन करते हुए पूज्या दीदी माँ जी, डॉ.श्याम अग्रवाल एवं डॉ.मनोज मोहन शास्त्री

हिन्दू सम्मेलन, बदनावर (म.प्र.)

तिरंगा लहराते जलयान युद्ध क्षेत्र को सकुशल पार कर रहे, यह भारत की शक्ति का प्रतीक है

आज बदनावर की धरती पर आई तो पुरानी स्मृतियाँ जागृत हो गईं। मुझे नानी बाई याद आ रही हैं जिनका शरीर छूट गया। गुरुदेव आते थे अखंड आश्रम में और पूरा बदनावर जो है उनके चरणों में बैठता था। हमारे श्री अग्रवाल जी, श्री यादव जी सहित मेरे अनेक गुरु भाईयों और गुरु बहनों से मिलना हुआ। मुझे बहुत आनन्द हो रहा है। ऐसा लगता है जैसे वर्षों के बाद अपने घर लौट आई हूँ।

निश्चित रूप से जिस संबंध में कोई स्वार्थ नहीं होता वो वर्षों बाद भी उतना ही ताजा होता है, जितना कि किसी फूल पर गिरी हुई ओस की बूंद। ऐसे संबंध वर्षों के बाद भी धुंधले नहीं पड़ते क्योंकि उनमें स्वार्थ नहीं होता। हम तो ऐसे भी 'वसुधैव कुटुम्बकं' की भावना को जीने वाले लोग हैं। हम मानते हैं और प्रयत्न करते हैं कि सारे विश्व से हमारा बंधुत्व हो। अभी ताजा उदाहरण ही देखिये कि ईरान और अमेरिका-इजरायल युद्ध में हमारी विदेश नीति कितनी संतुलित है। हार्मुज की खाड़ी से गुजरते हुए जिस समुद्री जहाज पर भारत का तिरंगा लहरा रहा होता है ना उस पर कोई मिसाइल गिराकर नष्ट करने का विचार भी नहीं करता। क्यों? क्योंकि सौहार्द और प्रेम के साथ आगे बढ़कर जाकर विश्व के अनेक देशों से संवाद करना, मित्रता की बात करना भारत के स्वभाव में है। चींटी को दाने डालना और पक्षियों को चोगा चुगाने की चेतना भारत के स्वभाव में है। चंदा को भी 'मामा' कहकर पुकार लेना भारत के स्वभाव में है। केवल अपने ही सुख की कामना ना करके सारे संसार के सुख की कामना करना, भारत के स्वभाव में है। यही बात है जो दुनिया से हमें अलग करती है। यही बात है जो दुनिया को हमारे प्रति आशा से भरती है।

हम भारत माँ की संताने होकर सहोदर हैं। सहोदर अर्थात्! एक ही माँ की कोख से जन्मे। भारत भूमि की इस पावन धरा ने हमको जन्मा है। हममें से कोई 'मति' का काम करता है, कोई 'शक्ति' का काम करता है कोई 'स्थिति' को दृढ़ करने का काम करता है और कोई 'गति' को तीव्रता देने का काम करता है। अगर मति भ्रमित हो गई क्या करोगे? जरा सा स्क्रू ढीला होगा ना तो बाजार में कागज बीनते दिखाई दोगे। भुजाएँ ही काट दी गई तो अस्तित्व पूर्ण कैसे कहलाएगा? अगर कमर तोड़ दी जाए, स्थिति छीन ली जाए तो शरीर और समाज टिक नहीं पाते। पैर कट जाएंगे तो गति कहाँ से आएगी?

इसीलिए ना मति का त्याग किया जा सकता है, ना शक्ति का त्याग किया जा सकता है, ना स्थिति को कमजोर किया जा सकता है और ना गति को अवरुद्ध किया जा सकता है। लेकिन इस देश में यह षडयंत्र चल रहे हैं। ये विफल कैसे होंगे? हम जब अहंकार शिखर नहीं, विनम्रता की झील बनेंगे। कोई बहुत बड़ा विद्वान है और किसी के पास विद्वता नहीं है लेकिन विपरीत परिस्थिति में वो संकट को अपनी छाती से झेल लेता है, तो क्या उसका योगदान कम है? जिसने अपनी प्रज्ञा जागृत करके हमको ब्रह्म का बोध कराया, क्या उसका योगदान कम है? कोई अपनी व्यावसायिक बुद्धि से देश की अर्थव्यवस्था में योगदान दे रहा है तो क्या वो किसी से कम है? कोई राष्ट्र को स्वच्छ रखता है तो क्या उसका योगदान किसी से कम आँका जा सकता है? ऐसे हम सब जब आपस में मुट्ठी की तरह मिल जाते हैं, तब हम केवल जगत नहीं रह जाते बल्कि जगदीश्वर बन जाते हैं। तब हम सारे विश्व के लिए 'जगन्नाथ' हो जाते हैं। आज हमें अपने उस स्वरूप को पहचानने की आवश्यकता है। क्योंकि आज हमारे विरुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेकों षडयन्त्र रचे जा रहे हैं।

आज हम जिस सबसे बड़े षडयंत्र के शिकार हैं वो-नैरेटिव। सोशल मीडिया के द्वारा विदेशों में बैठकर हिंदुओं के नाम से कोई अपने को राजपूत लिखता है, कोई ब्राह्मण लिखता है, कोई अपनी अन्य जाति या गौत्र लिखता है। एक-दूसरे के विरुद्ध ऐसी टीका-टिप्पणियाँ करते हैं, जिनसे पूरे हिन्दू समाज में वैमनस्यता पैदा हो जाए। किसी के षडयंत्रकारी के संदेशों को परवान चढ़ाना कहाँ की समझदारी है? हमें इस षडयंत्र से बाहर निकलने के विवेक को धारण करना बहुत जरूरी है। आज हिन्दू समाज को अभिमन्यु की तरह चक्रव्यूह में फँसाने के कुत्सित प्रयत्न हो रहे हैं। आपने गर्भ में ही इस चक्रव्यूह को भेदने की कला सीखनी है। आपको पुनः अभिमन्यु बनना है और इस चक्रव्यूह का भेदन करके अपने लक्ष्य की तरफ आगे बढ़ना है।

मेरे हिन्दू बंधु-भगिनियों, आप मंत्रों के रचयिता हो और अब षडयंत्रों के संहारी बनने की तैयारी कर लो। आप अपने भीतर जब भविष्य का दर्शन करने की सामर्थ्य उत्पन्न करोगे, मुट्ठी की तरह बंधे होगे, एकजुट रहोगे, अपने स्वार्थों को ताक पर धर दोगे, अपने सामने सिर्फ अपने राष्ट्र देव को रखोगे तो ही यह संभव है कि आप सनातन धर्म की रक्षा में सफल हो जाओगे।

मैं बदनावर में आपके इस प्रेमपूर्ण अभिनंदन की ऋणी रहूंगी। मेरे पूज्य गुरुदेव श्री युगपुरुष भगवान का यहाँ जो आश्रम है, उसमें विराजमान मेरे गुरुभाई स्वामी श्री श्रद्धानंद जी से भेंट कर आनन्द हुआ। मेरे संन्यासी शिष्य सत्यश्रेय गिरि (ऋषिराज) की ये जन्मभूमि है। मेरे इस कार्यक्रम में उनकी विशिष्ट भूमिका रही। बदनावर के सभी जितनी भी संस्थाएँ यहाँ आईं, महिला मंडल यहाँ आए, हमारे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के, हमारे बजरंग दल के, विद्यार्थी परिषद के और भारतीय जनता पार्टी के सभी राष्ट्र आराधकों को मैं शुभकामनाएँ प्रदान करते हुए अपनी वाणी को विराम देती हूँ।

पूज्या दीदी माँ जी का बदनावर, मध्यप्रदेश प्रवास

बदनावर (मध्यप्रदेश)

विगत 16 मार्च को पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी ने मध्यप्रदेश के धार जिले स्थित बदनावर की कृषि उपज मंडी में में एक विराट हिन्दू धर्म सभा को संबोधित किया। इसके पूर्व इंदौर से सड़क मार्ग द्वारा बदनावर पहुँचने के दौरान मार्ग के विभिन्न गाँवों में उनका पुष्पवर्षा कर स्वागत किया गया। इस अवसर पर परमशक्ति पीठ के महासचिव श्री संजय भैयाजी, साध्वी साक्षी चेतना जी, स्वामी श्री सत्यश्रेय गिरी जी तथा पूर्व मंत्री श्री राजवर्धनसिंह दत्तीगाँव भी उनके साथ रहे। ग्राम कानवन में उन्होंने नवनिर्मित गौशाला का लोकार्पण भी किया। उन्होंने बैजनाथ महादेव मंदिर, एकवीरा माता मंदिर तथा अखण्ड परमधाम आश्रम में पूजन-अर्चन किया।

कृषि उपज मंडी में आयोजित धर्मसभा में पूर्व मंत्री श्री दत्तीगांव ने दीदी माँ जी को पगड़ी पहनाकर अभिनंदन पत्र और तलवार भेंट की। बजरंग दल के विभाग संयोजक और कार्यक्रम आयोजक श्री लाखनसिंह जादौन ने गदा भेंट कर उनका स्वागत किया। केंद्रीय राज्यमंत्री श्रीमती सावित्री ठाकुर सहित आयोजन समिति के श्री मनोज सोमानी, श्री राजेश अग्रवाल, श्री अमित जैन, श्रीमती सुषमा पाठक, श्री शेखर यादव, श्री प्रहलाद सिंह सोलंकी, श्रीमती कुसुम सिंह दत्तीगांव, श्री जितेंद्र जाट, श्री प्रेमचंद परमार, श्री सुनील मोदी, श्री मनीष गुर्जर, श्री प्रह्लाद यादव, श्री योगेश मुकाती तथा श्री कन्हैयालाल गुर्जर ने भी उनका स्वागत किया। स्वामी श्री सत्यश्रेय गिरी जी ने स्वागत भाषण देते हुए पूज्या दीदी माँ के जीवन तथा वात्सल्य ग्राम के सेवा प्रकल्पों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन कवि श्री मुकेश मोलवा, श्री प्रीतेश सिंह पंवार और श्री योगेश पाटीदार ने किया। कार्यक्रम संयोजक श्री लाखनसिंह जादौन ने आभार व्यक्त किया।

स्वतंत्रता के नाम पर उच्छृंखलता बन्द होनी चाहिए

-दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

'अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस' पर विगत 8 मार्च को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित 'राष्ट्रीय वीमेन कान्क्लेव' को संबोधित करते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी ने कहा कि -'पश्चिम के जगत की समृद्धि सुविधा देती है और भारत का अध्यात्म सुख देता है, इसका बोध करा दिया। जितनी भी यहां मातृशक्ति बैठी है, साध्वी जन बैठे हैं, अभी गुरु मां ने कहा कि वो या फिर वो दो राहे पर खड़े हैं हम, जो चुन लेंगे वो हमारा भाग्य बन जाएगा, जो हमारा सौभाग्य बन जाएगा। वासना की प्यास को भक्ति में परिवर्तित करने की सामर्थ्य भारत की स्त्री में है। हमारे लिए हम स्वयं सिद्धा है। अपने परिवार के अलावा भी भारत की मातृशक्ति की बड़ी जिम्मेदारी है। आप देखिये कि किस तरह से आज शैक्षणिक संस्थाएँ भी राजनीति का अड्डा बनती जा रही हैं। क्या हम ऐसा होने से रोक सकते हैं? जिस विद्यालय में बच्चों को विद्या अर्जित करनी चाहिए, वहाँ वे एक दूसरे का मान मर्दन कर रहे हैं, एक दूसरे की जाति की बात कर रहे हैं, 'भारत तेरे टुकड़े होंगे' इस तरह के नारे लगा रहे हैं। इस गंदगी से शिक्षा संस्थानों को मुक्त करना चाहिए।

दूसरी बात ये है कि अगर आप चमड़ी के रोग को पाउडर से ढकेंगे तो रोग का इलाज नहीं हो पाएगा। पहले हम रोग को पहचाने फिर उसका निदान करें। रोग ये है कि हम अपनी जड़ों से कटे हुए हैं इसीलिए कोई हरा भरापन कहीं दिखाई देता नहीं। हताशा है, विषाद है, आशंका है और संबंधों में बहुत दुराव है। इन सबके कारण भारत के अधिकांश लोग स्वयं चौराहे पर खड़ा पाते हैं। जाना किधर है? संसार के साथ दौड़ में अपने इतने विराट दर्शन को अपने बच्चों से वंचित करना महामूर्खता है। इसीलिए थोड़ा साहस की अपेक्षा है। एक लंबी यात्रा करके यहाँ तक पहुँचे हैं। रामलला मिल गए, कृष्ण जन्मभूमि मिल जाएगी, बाबा विश्वनाथ भी मिलेंगे। जब हमारी संतानों को हमारी आत्मा मिल जाए, हमारी संतानों को अपनी धरा मिल जाए, धरती की गहराई मिल जाए, अध्यात्म मिल जाए, इसके लिए प्रयत्न होने चाहिए। आज महिला दिवस है मैं भारत की देवियों को इस मंच से संदेश देना चाहती हूं कि आपका परिचय हमेशा आपके पति से हुआ, आपके पिता से हुआ, आपके पुत्र से हुआ और आपके गुरु से हुआ लेकिन आपको कभी नहीं लगा कि आप गुलाम हो या पराधीन हो क्योंकि आपकी आत्मा स्वतंत्र रही है। आप एक स्वतंत्र के पक्ष पर खड़ी हुई और अपने आप में खिलती चली गई।

अब बात तथाकथित स्वतंत्रता के नाम से मिल रही उच्छृंखलता की। मैं आपसे निवेदन करना चाहती हूँ कि जो अनुशासित होता है वो शासित नहीं होता। आज यही तो हा रहा है मातृशक्ति के साथ। तथाकथित नारी मुक्ति के नाम पर स्वतंत्रता रूपी जो उच्छृंखलता है वो भारत की स्त्री को कभी भी कहीं भी किसी मंजिल तक नहीं पहुँचाएगी। एक नदी मर्यादा के तटों के किनारों पर बहते-बहते ही सागर को पाती है परन्तु जब मर्यादा के तटबंध तोड़ती है तो वो किसी भी गाँव में प्रवेश करती हुई वहाँ विध्वंस मचाती है। अन्ततः वो स्वयं भी मिट्टी में मिलती हुई गारा बन जाती है। भारत की स्त्री मर्यादा नीति के किनारों में बहती-बहती अपनी मंजिल को पाए ना कि वो उच्छृंखल होकर विध्वंस की कथा रचे। आज महिला दिवस पर प्रभु से इसी प्रार्थना के साथ इस आयोजन के लिए प्रयासरत रहीं शिवानी जी और सेविका समिति की सारी बहनों के पुरुषार्थ को प्रणाम करती हुई अपनी वाणी को विराम देती हूँ।

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के आगामी कार्यक्रम

24 वाँ वात्सल्य ग्राम स्थापना दिवस एवं भारत गौरव मंचीय प्रस्तुति

8 मई 2026

आयोजक : परमशक्ति पीठ

स्थान : वात्सल्य ग्राम, मथुरा-वृन्दावन मार्ग, वृन्दावन (उत्तर प्रदेश)

भारत माता मंदिर भूमि पूजन एवं शिलान्यास समारोह

24 अप्रैल 2026

आयोजक : डॉ.आबाजी थत्ते सेवा और अनुसंधान संस्था

स्थान : नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट, मौजा जामठा, नागपुर (महाराष्ट्र)

महामहिम के अभिनन्दन की आतुरता

भारत की माननीया राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी के वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन प्रवास पर उनके स्वागत की प्रतीक्षा में 'वैशिष्ट्यम्' स्कूल, वृन्दावन के विशेष बच्चे एवं स्कूल परिवार

टेलीविज़न पर

परम पूज्य सद्गुरुदेव युगपुरुष **स्वामी परमानन्द जी महाराज** की **परम वाणी**

परम पूज्य वात्सल्यमूर्ति **दीदी माँ साध्वी ऋतम्भराजी** की **वात्सल्य वाणी**

दिशा TV — प्रतिदिन रात्रि 9:30 बजे

Vedic — सोमवार, बुधवार एवं गुरुवार प्रातः 9:30 बजे

संस्कार THE CHANNEL OF INDIA — प्रतिदिन सायं 7:20 बजे

आस्था — प्रतिदिन प्रातः 8:00 बजे

सत्संग — प्रतिदिन रात्रि 10:00 बजे

Postal Regd. No. DL(E)20/5231/2025-27
DELMUL/2006/16716
Postal Date : 9th & 10th of Every month

An ISO 9001: 2000 Certified School

Samvid Gurukulam Girls Sainik SCHOOL

CBSE affiliated (# 2131180)
Co-Education up to Class Vth; Residential and Day School for Girls
Play Group - Grade XII (Science, Commerce, Humanities)

TECHNOLOGY ENABLED SCHOOL
Powered By : Extramarks

Approved as
Girls Sainik School
by 'Sainik School Society'
Ministry of Defense

We bring out the 'winner in your child'

- State of the art infrastructure
- Low teacher student ratio
- Total Personality Development
- Wi-Fi Campus
- Counseling Cell
- Center of performing arts
- Safe guarding Indian culture as part of world heritage
- Science, Computer & Mathematics Lab
- Regular Excursions
- Centrally Air cooled Hostel for girls.
- SANSKARAM CLASSES: Learning life skills through Value Education
- NANHI DUNIYA: Introduction of children to nature
- SPORTS ACADEMY: Horse Riding, Skating Football, Hockey, Basket Ball, Lawn Tennis, Table Tennis, Judo-Karate, 400M Track
- MUSIC: Vocal & Instrumental
- DANCE: Bharatnatyam, Kathak, Contemporary
- Transport facility available

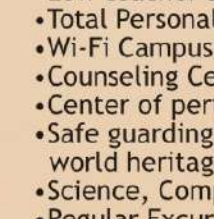

Vatsalya Gram, Mathura - Vrindavan Marg, P.O. - Prem Nagar,
Vrindavan - 281003 (U.P.) Mobile No. 94127 77152 & 94127 77154
Website : www.samvidgurukulam.org
Like us at : www.facebook.com / samvid4u
email : principal@samvidgurukulam.org